

## आंतरिक बल 621

दिव्य बल -1

-अहसास को बदल दो

-इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है, उसके पीछे कोई ना कोई बल है ।

-शरीरिक बल, भौतिक बल, यांत्रिक बल, बाहु बल, धन बल आदि आदि ।

-ये बल यथा शक्ति है ।

-एक सूक्ष्म बल जो दिखाई नहीं देता परन्तु सब भौतिक हल चल के पीछे कार्य कर रहा है ।

-वह है चुम्बकीय बल जिसे आकर्षण का बल भी कहते हैं ।

-एक है आत्मिक बल । यह भी सूक्ष्म बल है ।

-तीसरा बल है परमात्मा का बल जिसे अदृश्य बल, दिव्य बल या कुदरती बल आदि आदि के नाम से जाना जाता है ये बल भी सूक्ष्म है । इसे स्थूल आंखों से नहीं देखा जा सकता ।

-असल में तीन ही बल हैं जो अदृश्य हैं परन्तु असीमित हैं ।

-चुम्बकीय बल, आत्मिक बल और परमात्म बल ।

-चुम्बकीय बल और आत्म बल पर बहुत खोज हो चुकी है ।

-परमात्म बल के बारे सारा संसार जानता है परन्तु इसके बारे सभी के अनुभव अलग अलग है ।

-भौतिक और अभौतिक सुख भोगने वाली आत्मा ही है ।

-अगर आत्मा ईश्वरीय बल जिसे दिव्य बल या प्यार का बल कहते है उसके बारे जान जाए तो महान क्रांति हो सकती है

-चुम्बकीय बल के नियम अटल है ।

-ऐसे ही दिव्य बल/ प्यार के बल के नियम भी अटल होते है ।

-दिव्य बल प्रत्येक व्यक्ति और प्राणी पर कार्य करता है । इसी बल के कारण मृत्यु अवश्य होती है चाहे वह कोई भी हो ।

-हमे हर रोज इस दिव्य बल के बारे कुछ ना कुछ नया सीखना चाहिए और उस का लाभ उठाना चाहिए ।

-दिव्य बल अर्थात आप के अंदर जो भावनाए होती है वही आप के आने वाले कल को आकर्षित करती है ।

-चिंता अधिक चिंता को खींचती है । तनाव अधिक तनाव को खींचता है । दुख अधिक दुख को खींचता है । असंतोष अधिक असंतोष को खींचता है ।

-प्रसन्नता अधिक प्रसन्नता को खींचती है । आनंद अधिक आनंद को खींचता है । शांति अधिक शांति को खींचती है । दयालुता अधिक दयालुता को खींचती है । प्रेम अधिक प्रेम को खींचता है ।

-आप का काम अंदरूनी है अपने संसार को बदलने के लिए सिर्फ अपने अंदर के अहसास को बदल दो ।

## आंतरिक बल 622

दिव्य बल 2-

-प्रत्येक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सोचता रहता है । किसी ना किसी भावना से

प्रभावित होता रहता है ।

-न्यूली बोरन बेबी की एक ही भावना रहती है कि उसकी ममी उसे समय पर दूध पानी देती रहे और दूसरी सुविधाओ का ध्यान रखे ।

-अगर आप भावना रखते हैं अपने बॉस को, निमित्त टीचर को नहीं झेल सकता तो यह आप नकारात्मक भावना व्यक्त कर रहे हैं ।

-आप के संबंध बॉस के साथ कभी अच्छे नहीं बनेगे और ऐसे सभी लोगो के साथ नहीं बनेगे जिनके बारे आप ऐसा सोच रहे है ।

-यदि आप सोचते हैं 'मेरे घर के लोग, समूह के लोग', ऑफिस के लोग बहुत अच्छे हैं तो आप सकारात्मक

भावना भेज रहे हैं । इसका परिणाम यह होगा कि आप जहां जाओगे आप को सभी प्यार करेगे ।

-जितनी अच्छी भावना होगी उतना ही प्रेम करेगे । जितना खुश होंगे उतना ही प्रेम करेगे । बदले में आप को उतना ही प्रेम मिलेगा ।

-आप जब भी निराश होते हैं तो यह बुरी भावना है । इस का परिणाम आप को उदासी मिलेगी ।

जितना जितना अच्छा महसूस करेगे आप के जीवन में अच्छा घटित होगा ।

-जितना खुश रहेगे, सुखी रहेंगे, रोमांचित रहेगे, उत्साही रहेगे, ये सब अच्छी भावनाएँ हैं । इनका परिणाम आप का जीवन बहुत श्रेष्ठ बनेगा ।

-अगर आप चिढ़ते हैं तो यह नकारात्मक भावना है ।

-आप को चिढ़ाने वाली परिस्थितियाँ मिलेगी । आप को मच्छर काटेगा, कुत्ते भौंकेगे, बच्चे शोर करेगे । लोग बिना मतलब हॉर्न बजाएंगे जिस से आप को चिढ़ होगी ।

-अगर आप उदास हैं तो ऐसी ही परिस्थियाँ मिलेगी ।

-अगर आप खुश हैं तो खुशी की परिस्थितियाँ मिलेगी ।

- सभी व्यक्ति ज्यादातर नकारात्मक विचारों में रहते हैं इस लिए उन्हें सारा दिन नकारात्मकता मिलती है । यही

कारण है कि सभी व्यक्ति तनाव में रहते हैं ।

-कोई भी अच्छा काम करना चाहते हैं या कोई पुस्तक लिखना चाहते हैं तो पहले मन में खुशी लाओ । इसका आसान तरीका है ।

-कितना भी कोई विरोधी सामने बैठा हो आप अपना मन स्नेही व्यक्ति में लगाओ । मन में भगवान को देखो । अपने इष्ट को देखो । कोई बगीचा देखो । कोई अच्छी घटना में मन को लगाए रखो ।

-दिव्य बल का नियम कहता है कि बीमारी से लड़ कर उस से मुक्ति नहीं पा सकते ।

-अगर आप बीमारी से लड़ने के बारे में निर्णय लेते हैं तो आप अपना ध्यान बीमारी से लड़ने, यानी बीमारी पर केंद्रित कर लेते हैं और हम बीमारी को आकर्षित करते हैं ।

-आप ने जिन डॉक्टरों को चुना है उन्हें अपना काम करने दें और अपना दिमाग केवल स्वस्थ पर केंद्रित रखें ।

-तंदरुस्ती के विचार सोचें । तंदरुस्ती के शब्द बोलें । स्वस्थ व्यक्तित्व की कल्पना करनी चाहिए ।

## आंतरिक बल 623

-दिव्य बल -3

प्रत्येक मनुष्य जीवन में अच्छा चाहता है ।

- अच्छा का मतलब अच्छा है । हमें पता है कि अच्छा क्या है ।

-अच्छी भावना व विचार जब जब हमारे में रहते हैं तो सब अच्छा अच्छा लगता है ।

-हमे खुशी आती है, हम रोमांचित हो जाते हैं, उत्साहित होते हैं या जोशीले होते हैं ।

-मानसिक स्थिति ऐसी तब बनती है ।

-जब हम संगीत सुनते हैं । हम योग लगते हैं । कोई पार्टी होती है । कोई कवि सम्मेलन होता है ।

-जितनी देर तक कोई अच्छी इवेंट हो रही हो, हम खुश रहते हैं ।

-हमे मन पसंद नौकरी मिल जाए ।

-यदि आप अच्छी भावना, उत्साह की भावना, उमंग की भावना, रोमांच की भावना, कल्याण की भावना रखते हैं

--तब आप के जीवन में खुशिया ही खुशिया आएगी, आप हर कार्य में सफल होंगे । लौकिक जीवन की पढ़ाई में प्रथम आएंगे । आप वजीफा लेंगे । आप को बहुत अच्छी नौकरी मिलेगी । मन पसंद मित्र मिलेगे ।

-जो भी काम धंधा करेगे उस में बरकत होगी । सभी लोग सहयोगी होंगे । आप को आगे बढ़ने में सहयोग करेगे ।

-सिर्फ आप को अपने विचारो अपनी भावना पर नियंत्रण रखना है ।

-विरोधी व्यक्ति सामने होगा आप को उसके साथ रहना होता है, डांटने वाले, लड़ने वाले गुस्सा दिलाने वाले पीछे धकेलने वाले, ईर्ष्या करने वाले लोग सामने होंगे, आप को उनके प्रति नफरत उठेगी, भयंकर विचार उठेंगे ।

-ऐसा कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति सामने आने पर या अपने ही मन में व्यर्थ संकल्प आने पर भी अपने संकल्पों पर नियंत्रण रखना है ।

-विरोधी से बात कर रहे हैं परन्तु मन में किसी स्नेही को देखते रहो । भगवान की फोटो देखते रहो । अपने इष्ट को देखते रहो ।

-अगर यह नहीं हो सकता तो समुन्दर को देखते रहो । किसी फूल या पार्क को देखते रहो । किसी और मन पसंद दृश्य को देखते रहो । ऐसा करते हुए भगवान के दिव्य रूप बिंदु रूप को देखते रहो ।

-आप ने कोई फिल्म देखी है, गीत सुना है, कोई प्रवचन सुना है और आप को पसंद हैं । कोई हीरो हीरोइन पसंद हैं । आप उन्हें मन में देखो और बाबा को याद करते रहो । आप को अच्छा अच्छा लगने लगेगा ।

- बचपन के मन पसंद लोगो को देखते रहो । वे चाहे कहीं भी डरह रहे होंगे हमारा मन दिव्य बल के आकर्षण से उन लोगो से सम्पर्क कर लेता हैं । उनके सम्पर्क से हमे बहुत बल महसूस होता है ।

-अगर हम मन पसंद मृत व्यक्तियों को कल्पना में देखते हैं और भगवान को याद करते हैं तो हमारा मन उन से भी एनेर्जी लेने लगेगा । ..

## आंतरिक बल -624

-दिव्य बल -4

-प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे जीवन में सफलता मिले । मनचाहे लक्ष्य प्राप्त हो । बच्चे सफल कैसे हो । पति श्रेष्ठ कैसे बने । रोग कैसे ठीक हो । योग में सिद्धि कैसे प्राप्त करे । लोगो से स्नेह कैसे हो । लड़ाई झगड़े कैसे खत्म हो । काम धंधे में बढ़ोतरी कैसे हो । आपसी क्लेश कैसे खत्म हो । प्रायः प्रत्येक व्यक्ति यही प्रश्न करता है ।

-कोई भी काम करते हैं, करना चाहते हैं, चाहे वह भोजन बनाना हो, सकूल जाना हो, काम पर जाना हो, ज्ञान सुनना सुनाना हो, पहले अपने विचार, अपनी मनो भावना को चेक करो ।

-अपने विचारो को प्यार में बदलो ।

-उन सभी चीजो, सभी आदतों, सभी कार्यों, सभी व्यक्तियों, सभी साधनों के बारे सोचे, जिसे आप प्यार करते हैं या करते थे ।

-सब से उत्तम यह है कि भगवान के बिंदु रूप या इष्ट को देखते हुए भगवान के गुण सिमरन करो आप प्यार के सागर हैं,, प्यार के सागर हैं ।

-अगर मन में प्यार की लहर नहीं उठ रही है तो कोई प्यारा सा गीत या भजन आदि सुनो और सुनते रहो और भगवान को याद करते रहो । आप कोई काम भी कर सकते हैं परन्तु मधुर संगीत सुनते हुए करें ।



-अगर आप ऐसा नहीं करना चाहते । तब एक एक कर के घर, बाग-बगीचे , मित्र, फूल, मौसम, रंग, स्थितिया, घटनाए सप्ताह, महीने, वर्ष में जुड़ी हुई मनचाही प्रिय घटनाए, प्रिय चीजे, प्रिय व्यक्ति/व्यक्तियों को याद करो और बीच में भगवान को याद करते रहो, देखते रहो ।

-हो सके तो वह चीजे, व्यक्ति या और कुछ जो आप को बहुत प्रिय हैं, उनकी लिस्ट बना लो ।

-अच्छी भावनाओ और अच्छे विचारो को बढ़ाने का यह सहज तरीका हैं । इसे आप कहीं भी, कभी भी कर सकते हैं ।

-आप स्वास्थ्य, धन, संबंध, स्वास्थ्य, नौकरी और संबंधो के बारे जो महसूस करते हैं, आप के जीवन में वही घट रहा हैं । तथा आगे बढ़ कर मिलने वाला हैं ।

-इस समय जब आप यह लेख पढ़ रहे हैं चैक करो मै क्या सोच रहा हू । अगर नकारात्मक सोच रहे हैं तो इस का विपरीत अच्छा क्या हैं सिर्फ वह सोचो । यह संशय न आने दो कि पता नहीं, होगा कि नहीं । आप को सिर्फ अच्छा अच्छा सोचना हैं । जो चाहते हैं वह सोचना हैं । जो इस समय विपरीत घट रहा हैं उस पर नहीं सोचना ।

-आप अपने स्वास्थ्य के बारे नौकरी के बारे, परिवार के बारे या अन्य महत्वपूर्ण विषयो के बारे क्या सोच रहे हैं ।

-इस सोच पर ध्यान रखना हैं ।

-सिर्फ और सिर्फ अपनी मनोदशा, अपनी मनोस्थिति पर ध्यान रखना हैं ।

-आप की भावना और आप के आस पास के संसार का आपस में अटूट संबंध हैं ।

-परमात्मा का दिव्य बल अपनी तरफ से कुछ नहीं करता ।

-यह तो आप की भावनाओ पर प्रतिक्रिया करता हैं ।

-एक का लाख गुना अच्छा फल देता हैं ।

-एक का लाख गुना बुरा फल भी देता हैं ।

-हमारा प्रत्येक संकल्पा हमें बताता है कि यह ठीक है या गलत है ।

-सोचते ही अगर बुरा बुरा महसूस होता है तो यह परमात्मा अपने दिव्य बल से इशारा देता है कि यह ठीक नहीं, इसे मत करो इसका फल बुरा होगा ।

-इसलिए हमारे जीवन में जो विपरीत हो रहा है, उसे अच्छे विचारो में बदलो ।

## आंतरिक बल -625

-दिव्य बल -5

-हम अपने जीवन के रचियता हैं । अपने जीवन के लेखक हैं ।

-आप ही तय करते हैं कि आप का जीवन कैसा होगा ।

-यह सब हमारी भावनाओं और विचारों से तय होता है ।

-इस लिए अपने विचारों पर ध्यान दो ।

-बुरी भावनाओं की एक सीमा होती है ।

-बहुत ज्यादा गिर जाने पर जब सहन शक्ति जवाब दे जाती है । तब फिर मनुष्य अच्छाई की तरफ बढ़ने लगता है ।

-बुराई को इस हद तक जाने की नौबत मत आने दो ।

-तुरंत अच्छे विचारों अच्छी कल्पना में लग जाओ ।

-प्रेम जीवन की प्रबल शक्ति है । संसार में या व्यक्तिगत जीवन में जितनी भी समस्याएं हैं उन का मूल कारण है स्नेह की कमी । ईश्वर प्यार का सागर । हमें उस से सदा ही जुड़े रहना चाहिए ।

-जब हम बुराई की ओर सोचते हैं या करते हैं, परमात्मा का दिव्य प्रेम हमें सावधानी देता है, यह ठीक नहीं है ।

-जीवन में दुख बताते हैं कि आप साकारत्मक शक्ति, प्रेम की शक्ति से दूर हो गए हैं और बहुत लंबे समय से दूर हैं । बेशक आप सेवा करते हैं परन्तु मन से ईश्वरीय प्रेम से दूर हैं । कोई गलती कर रहे हैं और आप को पता भी है परन्तु शराबियों की तरह सेवा कार्यों में लगे रहने से दबा रखा है । जब तक सेवा करोगे बचे रहोगे । सेवा नहीं होगी तो तनाव होगा ।

आप जीवन में जो भी चाहते हैं इसलिए चाहते हैं क्योंकि आप को अच्छा लगता है', अच्छा अहसास होता है ।

-आप अपने जीवन में जो नहीं चाहते बीड़ी, सिगरेट, मास मदिरा इसलिए नहीं चाहते क्योंकि बुरा अहसास होता है ।

-हम अच्छा स्वास्थ्य चाहते हैं क्योंकि इस से हमें अच्छा अहसास महसूस होता है ।

-सभी व्यक्ति मधुर संबंध चाहते हैं क्योंकि इस से हमें अच्छा अहसास होता है । कटु संबंध इसलिए नहीं चाहते क्योंकि इस से बुरा अहसास होता है ।

-हम रोना नहीं चाहते क्योंकि इस से हमें बुरा अहसास होता है ।

-कोई भी चीज की इच्छा इसलिए करते हैं क्योंकि हम सोचते हैं इस से हमें अच्छा लगेगा ।

-अच्छी चीजे मिलती कैसे हैं ।

-अच्छी भावनाओ से अच्छी चीजे मिलती हैं ।

-आप जिन चीजो को चाहते हैं, जिन व्यक्तियों को चाहते हैं, जिन से प्रेम करते हैं, वह चीजे, वह व्यक्ति भी आप को चाहते हैं

आप के जीवन में आने को बेताब हैं ।

-उन्हे निमंत्रण तो दो ।

-निमंत्रण है सिर्फ अच्छी भावनाए दो । बेशर्त प्रेम दो । मेरे जीवन में आने से आप को यह यह लाभ होगा यह सोचो । अगर यह सोचेंगे कि आप अगर

मेरे पास आएंगे तो मुझे फायदा होगा तब वह आप के जीवन में नहीं आएंगे।

-जीवन की बुरी स्थिति को बदलने के लिए संघर्ष की जरूरत नहीं ।

-बस अच्छी भावना रखो । उन्हे प्रेम दो । संगीत सुनो । अच्छी पुस्तके पढ़ो । दाता बनो । भिखारी क्यो बनते हो । आप नहीं आए तो हम मर जाएंगे मरे आप का दुश्मन आप क्यो मरे । आप ऐसा अपने बारे बुरा ना सोचो । आप ईश्वर की संतान हैं । ईश्वर से शक्ति लो ।

-परमात्म के दिव्य प्रेम से आप की मनचाही चीजे, मनचाहे व्यक्ति आप के जीवन में आ जाएंगे । परन्तु इस में प्रकृति को पर्याप्त समय दो । बीज डालते ही नहीं उगता । समय लगता है । गेहूं को तैयार होने में 6 मास लगते हैं । एक अच्छा संबंध बनाने में कम से कम 1से 3 वर्ष लगता है । बिगड़े संबंध बनाने में भी इतना ही समय लगता है । किसी को मजबूर मत करो ।

-एक बात दिमाग में बिठा लो, किसी भी व्यक्ति को हम योग से बदल सकते हैं या केवल और केवल प्रेम से बदल सकते हैं ।

## आंतरिक बल 626

-दिव्य बल -6

-तब और जब

-क्या आप जीवन भर, तब और जब, शब्द का प्रयोग करते हैं ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब अपना मकान होगा ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब मेरी प्रमोशन हो जाएगी ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब मुझे नौकरी मिल जाएगी ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब बच्चे अच्छे पदों पर पहुंच जाएंगे ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब दीदी बन जाऊगी ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब करोड़पति बन जाऊंगा ।

-मैं तब खुश होऊंगा जब मंत्री बन जाऊंगा ।

-मुझे तब खुशी मिलेगी जब निरोगी हो जाऊंगा ।

-मुझे तब खुशी मिलेगी जब दुश्मन मर जाएगा ।

-ये चीजे कभी नहीं मिलेगी ।

-आप दिमाग में शर्त लगा रहे हैं ।

-दिमाग यह चीजे घटित नहीं होने देगा ।

-यह परमात्मा के दिव्य बल प्रेम के विपरीत है ।

-जो भी पाना चाहते हैं उसे प्रेम देना शुरू करो जी ।

-मष्णी बातचीत मैं, है और जाऊंगा, । का शब्द याद रखो ।

--मुझे खुशी है कि मैं ठीक हो जाऊंगा ।

-मुझे खुशी है कि मुझे अच्छी नौकरी मिल जाएगी ।

-मुझे खुशी है कि मुझे अच्छे लोग मिल जाएंगे ।

\_मुझे खुशी है कि मैं दीदी बन जाऊगी

-आप इस पल जो बोल रहे हैं सोच रहे हैं, महसूस कर रहे हैं वही चीजे जीवन में बढ़ेगी । इसलिए तुरंत विपरीत अच्छा सोचो ।

## आंतरिक बल 627

-दिव्य बल -7

- भावनाए बल देती हैं ।

-प्रेम से अच्छी भावनाए उत्पन्न होती है ।

-कोई भी अच्छी भावना उठती है, अच्छा विचार उठता है, अच्छी प्रेरणा आती है या संगीत सुनते हैं तो हम परमात्म की दिव्य शक्ति प्रेम से जुड़ जाते हैं ।

-अगर आप एक एक कर के अपनी प्रिय चीजों को मन में रिपीट करते रहे और भगवान के गुणों का मन में सिमरन करते रहे तो जीवन में क्रांति आ जाएगी ।

- आप जो सोचते हैं, जो दुनिया को देते हैं, जो प्राकृति को देते हैं, वही हमें कई गुणा बढ़ कर मिलता है ।

-आप की भावनाएँ जितनी अच्छी होगी, आप की सोच जितनी अच्छी होगी, कल्पना जितनी अच्छी करोगे, कर्म में, बोल में, व्यवहार में जितना अच्छे होंगे आप का जीवन अनंत ऊँचाई पर पहुँच जाएगा ।

-हम जीवन में जो भी चाहते हैं, इस का मतलब है उस से हम प्यार कर रहे हैं ।

-हम धन चाहते हैं, सेहत चाहते हैं, पद चाहते हैं, इस का मूल यह है कि इन्हें आप प्यार करते हैं और जिसे हम प्यार करते हैं वह हमारे जीवन में आ जाता है ।

-आप जो चाहते हैं बस उसे मन में देखते रहो, सोचते रहो, आराम से करो परेशानी में ना रहो, ये चीजे सहज आ जाएगी ।

-मेरा बहुत अच्छा योग है, मैं कर्मातीत बन जाऊँगा, मैं सर्वगुण सम्पन्न बनूँगा, मैं भाषण करूँगी, सभी मुझे प्यार करते हैं और मैं आदर्श हूँ । जब भी समय मिले हर रोज ये शब्द मन में दोहराते रहो । धीरे धीरे सभी कुछ आप के जीवन में घटित होने लगेगा ।

-किसी अच्छे लक्ष्य को प्राप्त करने की शर्त है, पहले आप अच्छे विचार करें, खुशी की घटनाएँ याद करो, अच्छे गीत सुना करो, स्नेही व्यक्तियों को



दिमाग में रखा करो, भगवान के बिंदु रूप को या इष्ट को देखते हुए सिमरन करते रहो आप प्यार के सागर हैं।

-आप जो भी प्राप्त करना चाहते हैं, जो आप का लक्ष्य है, उसके बारे में बोलते समय यह कहा करो कि खुशी की बात है कि मैं अमुक चीज को, लक्ष्य को प्राप्त करूंगा।

-परन्तु ये विचार सिर्फ मन में दोहराते रहना है मुख से नहीं बोलने है। अगर आप अपने लक्ष्य के बारे में बोलते हैं तो लोग आप का मनोबल तोड़ देंगे। आप का मजाक उड़ाएंगे।

-अगर आप अपने मन में सोच रहे हैं तो उनको पता नहीं पड़ेगा और आप आगे बढ़ जाएंगे।

-अगर आप महान बनना चाहते हैं तो अपने लक्ष्यों से संबंधित कोई ना कोई एक ऐसी पुस्तक अपने पास रखें जो आलोक प्रदान करने वाली हो दूसरा अव्यक्त मुरली की कोई एक पुस्तक अपने पास रखो।

-जब भी थोड़ा सा समय मिले उसे पढ़ते रहें और तब तक पढ़ते रहें जब तक आप के जीवन में तथा दैनिक कार्यों में प्रतिफलित न होने लगे।

## आंतरिक बल -628

-रेडियो स्टेशन

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-प्रत्येक मनुष्य का मन एक रेडियो स्टेशन की तरह कार्य करता है ।

-प्रत्येक मनुष्य में प्रसारण और प्राप्ति के केंद्र है ।

-प्रत्येक विचार प्रत्येक भावना की एक फ्रीक्वेन्सी है

-अच्छे विचार और अच्छी भावनाओं का मतलब है कि आप सकारात्मक फ्रीक्वेन्सी पर हैं ।

-चुम्बक की तरह आप जिस फ्रीक्वेन्सी पर हैं उसी तरह के व्यक्ति, घटनाएँ और परिस्थितियाँ अपनी ओर खींचने लगते हैं ।

-आप उत्साहित हैं तो उत्साहित लोगों को आकर्षित करते हैं ।

-आप की फ्रीक्वेन्सी वह है जो आप महसूस कर रहे हैं ।

-अपने विचारों को बदल कर अपनी फ्रीक्वेन्सी कभी भी बदल सकते हैं ।

-जब आप सकारात्मक फ्रीक्वेन्सी पर होते हैं तो संबंध, सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति स्नेही, रोमांचक और सहयोगी होते हैं ।

-अगर नकारात्मक फ्रीक्वेन्सी पर है तो दुखी, कुंठित और निराश होते हैं । तथा जहाँ भी जाएंगे आप को ऐसे ही लोग मिलेंगे ।

-यदि कोई तनाव है, निराशा है, अकेलापन है, कमी है, तो इस का मतलब है कि आप गलत फ्रीक्वेन्सी पर हैं। आप की तरंगे नकारात्मक वातावरण बना रही है। तथा यह काफी लंबे समय से हो रहा है।

-ऐसी मनोदशा को तुरंत बदलो।

-प्रेम की फ्रीक्वेन्सी सब से शक्ति शाली तरंग है।

-प्रेम से आप अपने जीवन में हर प्रिय और मनचाही चीज प्राप्त कर सकते हैं।

- आज संसार में प्रत्येक व्यक्ति परेशान है। इस का कारण यह है कि लोग प्रेम तो करते हैं लेकिन कभी कभार करते हैं।

-अक्सर वे दिन में सैकड़ों बार प्रेम करना छोड़ देते हैं।

-वे इतने लम्बे समय तक प्रेम नहीं करते की प्रेम की शक्ति उन के जीवन में अच्छी चीजे ले आए।

-एक पल आप किसी प्रिय व्यक्ति से गले मिल कर प्रेम देते हैं। कुछ ही मिनट बाद आप प्रेम देना छोड़ देते हैं, -क्योंकि आप को जल्दी है और कार की चाबी नहीं मिल रही है। आप चाबी ढूढ़ने लग जाते हैं।

-आप अपने बेटेको दुलार रही हैं और अगले ही पल उसे डांट देती हैं क्योंकि आप को भोजन बनाना है और गैस खत्म हो गई है। भोजन बनाने की चिंता में लग जाते हैं।

-किसी मित्र से आप ठहाके लगा लगा कर हंस रहे हैं । परन्तु अगले ही पल नाराज हो जाते हैं क्योंकि उसने आप को उधार देने से मना कर दिया ।

-किसी व्यक्ति की बेसबरी से इंतजार कर रहे थे, आप उसे मन से प्यार दे रहे थे । परन्तु उसके आने पर बहुत खर्च हो गया ।

तब आप प्रेम देना छोड़ देते हैं ।

-जो भी व्यक्ति हमारे साथ रहते हैं या हमारे सम्पर्क में आते हैं, उन्हें हम प्रेम देते हैं और प्रेम देना छोड़ देते हैं ।

-जब हमारे मन में प्रेम नहीं होता है तो बहाना बनाते हैं हम बहुत बिजी हैं ।

-जिन लोगो से हम प्यार करते हैं, जब वह हमें झिड़क देते हैं, हमारी निंदा करते हैं, छोटी छोटी बातों पर गुस्सा करते हैं तो हम उन्हें प्यार करना छोड़ देते हैं ।

- जब हम प्रेम देना छोड़ देते हैं तो नकारात्मक फ्रीक्वेन्सी पर आ जाते हैं और नकारात्मक तरंगे खीचने लगते हैं जिस से हमारे जीवन में अशांति अनुभव होने लगती हैं।

-सदा मन में परमात्मा को या इष्ट को या किसी मन पसंद व्यक्ति, किसी बच्चे, किसी अनजान व्यक्ति, किसी वस्तु को मन से प्यार करते रहो । इस से आप सदा प्यार की फ्रीक्वेन्सी पर रहेंगे और मनचाही सभी चीजे आप के जीवन में आने लगेंगी ।

## आंतरिक बल -629

-मन रेडियो स्टेशन हैं -2

-ऐनटीना विद्युत चुम्बकीय तरंगो को प्रसारित करने या ग्रहण करने के काम आता हैं ।

-ऐनाटीना विद्युत चुम्बकीय तरंगो को विद्युत संकेतों में बदल देता हैं ।

-ऐनटीना रेडियो, रडार, दूर दर्शन, वायरलेस और मोबाइल आदि का प्रथम और अतिम अवयव हैं ।

-यह एक धातु का टुकड़ा हैं जो विद्युत तरंगो का सुचालक हैं ।

-अलग अलगा ऐनटीना की अलग अलग शक्ति होती हैं ।

-ऐनटीना 1 किलोमीटर से लेकर लाखो किलो मीटर तक तरंगे प्रसारित और ग्रहण कर सकता हैं ।

-मानसिक ऐनटीना

-हमारे दिमाग में भी एक ऐनटीना हैं ।

-हमारे सिर में पतालू में एक ऊर्जा चक्र हैं जिसे सहस्त्रार चक्र कहते हैं ।

- इस सहस्त्रार चक्र में एक हजार पंखड़ियों वाला कमल का फूल हैं ।

-इन पंखड़ियों में बल्ब के प्रकाश की तरह टिमटिमाहट होती रहती हैं ।

-ये पंखड़ियों और कुछ नहीं एक हजार मानसिक ऐनटीने हैं जो जलते बूझते रहते हैं ।

-यह ऐनटीने रिसिवर का भी काम करते हैं ।

-पूरे ब्रह्मांड में हमारे बारे कोई कुछ भी बोलता या सोचता है हमारा ऐनटीना उसे ग्रहण कर लेता है ।

-हम भी किसी के बारे सोचते हैं तो इसी ऐनटीना के माध्यम से हमारे विचार उस व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं ।

- ऐंटीना से होते हुए विचार हमारे नाक में से निकल कर आकाश में जाते हैं ।

-नाक में एक छोटा सा छेद है जहां नाक की हड्डी बढ़ जाती है और साईंस का ऑपरेशन करवाते हैं, वहां से तरंगे बाहर निकलती हैं और यहीं से रिसीव होती है ।

-नाक का यह भाग हमारे गले, आंख और कान से भी जुड़ा है और उनसे प्राप्त संदेशों का भी प्रभाव होता है ।

## आंतरिक बल -630

-रेडियो स्टेशन -3-

-हमारा दिमाग एक रेडियो स्टेशन की तरह काम करता है ।

- यह बात बहुत कम लोग जानते हैं । यही कारण है कि सारा संसार भगवान को अपने अपने ढंग से याद करता है परन्तु मनचाही प्राप्ति नहीं होती ।

-राजयोगी भी जिस योग का अभ्यास करते हैं वह बहुत सहज हैं, भगवान स्वयं उन का मार्ग दर्शन कर रहे हैं फिर भी वह निरंतर योगी नहीं बन पा रहे हैं । वह भी अनेको परेशानियों से जकड़े हुए हैं ।

-सर्व प्राप्ति न होने का कारण यह है कि वह यह नहीं जानते कि दिमाग से संदेश कैसे प्रसारित और ग्रहण होते हैं ।

-जब हम अपने को आत्मा समझ परमात्मा के बिंदु रूप को देखते हुए अपना मन परमधाम में एकाग्र करते हैं और भगवान के किसी एक गुण जैसे कि आप प्यार के सागर हैं इसका सिमरन करते हैं तो इस से दिमाग में बल बनने लगता है ।

-इस बल के प्रभाव से सहस्त्रार चक्र में एक ऐसा एंटीना है जो भगवान से जुड़ा हुआ है वह खुल जाता है और हम भगवान से शक्ति लेने लगते हैं । जितना ज्यादा देर इस गुण का सिमरन करेगे परमधाम की शांति और अन्य शक्तियां जो हम नहीं जानते हैं वह भी अनुभव होने लगेगी ।

-बाबा आप प्यार के सागर हैं इस शब्द का दस हजार बार सिमरन कर लेते हैं तो हमारा मानसिक एंटीना भगवान से इतनी शक्ति खींच लेता है जिस से हमारे मन पर एक दिन किसी भी नकारात्मकता का असर नहीं होता और हमें बहुत अच्छी अनुभूति होती है । एक अजीब तरह का अनुभव होता है ।

-इस अनुभव को आप खुद करेंगे तब समझ पाएंगे ।

-इस का अनुभव करने के लिए परमात्मा को कल्पना में देखते हुए लिख लिख कर अभ्यास करना है कि भगवान आप प्यार के सागर हैं ।

-आमतौर पर लोग चलते फिरते ये अभ्यास करते हैं और समझते हैं दस हजार बार सिमरन कर दिया है । परन्तु हकीकत में 1000 के आसपास की संख्या में अभ्यास कर पाते हैं । कई तो 100 बार से ज्यादा नहीं कर पाते और समझते हैं बहुत हो गया ।

-जबानी अभ्यास करते हैं तो मन चीटिंग कर जाता है , क्योंकि मन इधर उधर चला जाता है ।

-कई लोग माला फेरते हैं उस में भी मन चीट करता है । कुछ दिनों तक अभ्यास करने के बाद अंगुलिया अपने आप माला फेरती रहती है जैसे बहिर्न स्वॉटर बुनते समय बिना ध्यान दिए सलाइयाँ चलाती रहती है । हम साइकल चलाते हैं और पैर अपने आप चलते रहते हैं यह पता नहीं चलता कि कितनी बार पैडल घुमाया है ।

-लिख कर याद करने से ये फायदा है कि जैसे मन कुछ और सोचेगा तो लिखना बंद हो जाएगा ।

- लगभग 6 मास तक लिख कर अभ्यास जरूर करें । फिर आप का संस्कार बन जाएगा और बिना लिखे भी अभ्यास कर सकेगे ।



- अपने को बिंदु समझने से हम पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो जाते हैं जिस से हमें किसी की ^ देह नहीं खींचती ।

-बिंदु रूप समझने से सातों ऊर्जा चक्र चार्ज होने लगते हैं ।

-बिंदु रूप समझने से हमारी कर्मइन्द्रिया, हमारा मन, बुद्धि और संस्कार हमारा कहना मानने लगते हैं ।

-बिंदु रूप समझने से हमारे साथी हमारा कहना मानने लगते हैं ।

- अगर हम तीन घंटा बिंदु रूप का अभ्यास कर के किसी कड़े संस्कार वाले व्यक्ति से बात करें तो वह भी हमारा कहना मानेगा और जो लोग आश्रम पर नहीं आते हैं वह भी आने लगेंगे ।

-कोई आप के सामने अभद्रता से पेश आ रहा है आप धीरे धीरे मुख से बोले आप शांत हो शांत हो आप स्नेही हो स्नेही हो उस पर जादू कि तरह असर होगा ।

-हर पल यह भाव रखो मैं निराकार हूँ मैं हवा की तरह दिखता नहीं दिखता नहीं । इस अभ्यास से बहुत अच्छा महसूस होगा ।

-बिंदु रूप समझने से हमारा सूक्ष्म शरीर 5 किलो मीटर प्रति सैकिंड की गति से दौड़ने लगता है जिसके प्रभाव से स्थूल शरीर धरती की चुम्बकीय शक्ति को पार कर जाता है और हमें हल्का हल्का लगने लगता है । हमें ऐसे लगेंगे जैसे उड़ रहे हैं । कई योगी तो सच मुच में धरती से 2-3 फिट ऊपर उठ जाते हैं ।

-जितना ज़्यादा बिंदु रूप में टिके रहेंगे आप आगे की तरफ झुकते जाएंगे । यह पृथ्वी के चुम्बकीय बल से बचने के लिए हमारा दिमाग करता है क्योंकि अगर हम आगे न झुके तो रीढ़ की हड्डी टूट सकती हैं ।

-पढ़ाई करते समय या गहरी सोच में भी विद्यार्थी वा व्यक्ति अनजाने में आगे झुकते जाते हैं ।

-किसी के प्रति सत्कार या प्यार की भावना आने से भी हम उनके आगे झुक जाते हैं, क्यो की सत्कार के संकल्प से वही बल पैदा होता जो बिंदु समझने से होता है ।

## आंतरिक बल 631

-रेडियो स्टेशन -4

-आप ने ऐसे सिद्ध पुरुषो के बारे में सुना होगा जो एक ही समय पर दो जगह पर विराजमान हो जाते थे ।

-उनके शिष्य जब याद करते थे तो वे वहां पहुंच जाते थे ।

-लाहिड़ी बाबा अपने शिष्यों के पास पहुंच जाया करते थे जो हजारो मील दूर होते थे । वह उन से बात करते रहते थे । उनके शिष्य उसकी आवाज सुनते थे । बातचीत करते थे । परन्तु वह शिष्यों को दिखाई नहीं देते थे ।

-लाहिड़ी बाबा के शिष्य कहते थे गुरु जी आप दिखाई क्यों नहीं देते । तब बाबा कहते थे आप की बुद्धि पूरी शुद्ध नहीं है इसलिए मैं तो तुम्हें देख सकता हूँ परन्तु तुम मुझे नहीं देख सकते ।

-लाहिड़ी बाबा ने ये शक्ति लगभग 40 वर्ष की तपस्या के बाद प्राप्त की और इसके लिए उन्होंने 18 से 20 घंटे की साधना हर रोज की थी ।

-कभी कभी आप सब का मन होता होगा की काश मैं भी फ़रिश्ता बन कर जहाँ जाना चाहूँ वहाँ आ और जा सकूँ ।

- ऐसा हरेक व्यक्ति कर सकता है ।

-हमारे दिमाग के सहस्रार चक्र में एक एनटीना है । जिसे अक्टिवेट करना है । इसके लिए थोड़ा अटेन्शन और अभ्यास की जरूरत है ।

-चलते फिरते उठते बैठते सिर्फ एक संकल्प रिपीट करना है मैं फ़रिश्ता हूँ फरिश्ता हूँ । मैं प्रकाश का शरीर हूँ । मेरी स्थूल देह के अंदर मेरा सूक्ष्म प्रकाश का शरीर है ।

-जैसे ही हम अपने को फ़रिश्ता समझते हैं । इस संकल्प को रिपीट करते हैं तो हमारे दिमाग में व स्थित केंद्र/आंटीना कार्य करने लगता है । उस से ऐसी तरंगें निकलती हैं जो वह हमारे सूक्ष्म शरीर को स्थूल देह से अलग करने लगती हैं ।

-अगर हम तीन घंटे योग का अभ्यास करते हैं या लगभग 10 हजार संकल्प रिपीट कर लेते हैं तो हम अपने को इस शरीर से अलग महसूस करते हैं। हमें हलका हलका महसूस होता है। ऐसे लगता है जैसे हम उड़ रहे हैं।

-भगवान के बिंदु रूप को सामने देखते हुए अगर हम यह अभ्यास दस हजार घंटे कर लें तो हम सच मुच में देह से जब चाहे अलग हो सकते हैं और जहां चाहे वहां जा सकते हैं। आप लोगो से बातचीत कर सकेगे परन्तु उन्हें दिखेंगे नहीं।

-जैसे ही मन में संकल्प करते हैं की मैं फरिश्ता हूँ तो हमारे दिमाग रूपी आन्टीना से ऐसी तरंगे प्रवाहित होती हैं जो हमें सूक्ष्म लोकों से जोड़ देती हैं।

-हम ब्रह्मापूरी, विष्णु पूरी, शंकर पूरी या और जो भी अदृश्य लोक हैं उनसे जुड़ जाते हैं। उन लोकों में हो रहे कार्य कलापों को पकड़ने लगते हैं। वहां से प्रेरणाएं प्राप्त करने लगते हैं। उन लोकों को समझने लगते हैं।

-इसी अभ्यास से तपस्वी दूर स्थित ग्रहो की जानकारी खोज पाए जो विज्ञान आज खोज रहा है।

-जैसे ही हम फरिश्ता रूप का अभ्यास करते हैं हम उन योगियों से भी जुड़ने लगते हैं जो इस समय तप कर रहे हैं, वह चाहे हिमालय पर हो या और कहीं रह रहे हो।

-जैसे ही हम फरिश्ता रूप का अभ्यास करते हैं हम विश्व के श्रेष्ठ व्यक्तियों से जुड़ने लगते हैं जो u मदर तरेसा की तरह समज निर्माण के कार्यों में लगे हुए हैं।

-यही अभ्यास अगर हम 6 से 8 घंटे करें तो हम चलते फिरते फ़रिश्ते दिखेंगे लोगो को साक्षात्कार होने लगेंगे ।

## आंतरिक बल 631

-रेडियो स्टेशन -4

-आप ने ऐसे सिद्ध पुरुषो के बारे में सुना होगा जो एक ही समय पर दो जगह पर विराजमान हो जाते थे ।

-उनके शिष्य जब याद करते थे तो वे वहां पहुंच जाते थे ।

-लाहिड़ी बाबा अपने शिष्यों के पास पहुंच जाया करते थे जो हजारो मील दूर होते थे । वह उन से बात करते रहते थे । उनके शिष्य उसकी आवाज सुनते थे । बातचीत करते थे । परन्तु वह शिष्यों को दिखाई नहीं देते थे ।

-लाहिड़ी बाबा के शिष्य कहते थे गुरु जी आप दिखाई क्यों नहीं देते । तब बाबा कहते थे आप की बुद्धि पूरी शुद्ध नहीं है इसलिए मैं तो तुम्हे देख सकता हूं परन्तु तुम मुझे नहीं देख सकते ।

-लाहिड़ी बाबा ने ये शक्ति लगभग 40 वर्ष की तपस्या के बाद प्राप्त की और इसके लिए उन्होंने 18 से 20 घंटे की साधना हर रोज की थी ।

-कभी कभी आप सब का मन होता होगा की काश मैं भी फ़रिश्ता बन कर जहां जाना चाहू वहां आ और जा सकू ।

- ऐसा हरेक व्यक्ति कर सकता है ।

-हमारे दिमाग के सहस्त्रार चक्र में एक एनटीना है । जिसे अक्टिवेट करना है । इसके लिए थोड़ा अटेन्शन और अभ्यास की जरूरत है ।

-चलते फिरते उठते बैठते सिर्फ एक संकल्प रिपीट करना है मैं फरिश्ता हूँ फरिश्ता हूँ । मैं प्रकाश का शरीर हूँ । मेरी स्थूल देह के अंदर मेरा सूक्ष्म प्रकाश का शरीर है ।

-जैसे ही हम अपने को फरिश्ता समझते हैं । इस संकल्प को रिपीट करते हैं तो हमारे दिमाग में व स्थित केंद्र/आंटीना कार्य करने लगता है । उस से ऐसी तरंगे निकलती है जो वह हमारे सूक्ष्म शरीर को स्थूल देह से अलग करने लगती है ।

-अगर हम तीन घंटे योग का अभ्यास करते हैं या लगभग 10 हजार संकल्प रिपीट कर लेते हैं तो हम अपने को इस शरीर से अलग महसूस करते हैं । हमें हलका हलका महसूस होता है । ऐसे लगता है जैसे हम उड़ रहे हैं ।

-भगवान के बिंदु रूप को सामने देखते हुए अगर हम यह अभ्यास दस हजार घंटे कर लें तो हम सच मुच में देह से जब चाहे अलग हो सकते हैं और जहां चाहे वहां जा सकते हैं । आप लोगो से बातचीत कर सकेगे परन्तु उन्हें दिखेंगे नहीं ।

-जैसे ही मन में संकल्प करते हैं की मैं फरिश्ता हूँ तो हमारे दिमाग रूपी आंटीना से ऐसी तरंगे प्रवाहित होती हैं जो हमें सूक्ष्म लोकों से जोड़ देती हैं ।

-हम ब्रह्मापूरी, विष्णु पूरी, शंकर पूरी या और जो भी अदृश्य लोक हैं उनसे जुड़ जाते हैं। उन लोकों में हो रहे कार्य कलापों को पकड़ने लगते हैं। वहां से प्रेरणाएं प्राप्त करने लगते हैं। उन लोकों को समझने लगते हैं।

-इसी अभ्यास से तपस्वी दूर स्थित ग्रहों की जानकारी खोज पाए जो विज्ञान आज खोज रहा है।

-जैसे ही हम फरिश्ता रूप का अभ्यास करते हैं हम उन योगियों से भी जुड़ने लगते हैं जो इस समय तप कर रहे हैं, वह चाहे हिमालय पर हो या और कहीं रह रहे हो।

-जैसे ही हम फरिश्ता रूप का अभ्यास करते हैं हम विश्व के श्रेष्ठ व्यक्तियों से जुड़ने लगते हैं जो उ मंदर तरेसा की तरह समज निर्माण के कार्यों में लगे हुए हैं।

-यही अभ्यास अगर हम 6 से 8 घंटे करें तो हम चलते फिरते फरिश्ते दिखेंगे लोगो को साक्षात्कार होने लगेंगे।

## आंतरिक बल -632

-रेडियो स्टेशन -5

-फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास

-जब हम फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास करते हैं तो हमारे में सूक्ष्म दिव्य बल बनने लगता है जो हमें देह में रहते हुए देह से अलग करने लगता है।

- फरिश्ता स्वरूप समझने से हमारे चारो तरफ सुरक्षा चक्र बनने लगता हैं ।
- देवताओ के सिर के चारो तरफ एक प्रकाश का गोला देखते हैं ऐसा ही चक्र हमारे सारे शरीर के चारो तरफ बनने लगता हैं ।
- मैं शांत स्वरूप फरिश्ता हूं जब इस शब्द को 10 हजार बार रिपीट कर लेते हैं तब यह सुरक्षा चक्र बन जाता हैं ।
- ये सुरक्षा चक्र बना गया हैं इस की निशानी यह हैं कि आप के ऊपर किसी भी व्यक्ति के व्यवहार, बोल और कर्म का असर नहीं होगा । हम उन से आहत नहीं होंगे ।
- दूसरी निशानी यह हैं कि हमारे मन में नकारात्मक विचार नहीं उठेंगे । हमारे में पांच विकार तूफान की तरह नहीं उठेंगे ।
- हमें अपवित्रता का विकार परेशान नहीं करेगा । किसी की देह का आकर्षण नहीं होगा ।
- हमें पास्ट की बाते, पास्ट के व्यवहार, पास्ट के कर्म, पास्ट की कमिया सताएगी नहीं और ये सब हमें एक सपना लगेगी ।
- अगर यह सब लक्षण आप के जीवन में हैं तो इस का सीधा सा मतलब हैं आप का फरिश्ते स्वरूप का अभ्यास कम हैं ।
- आप फरिश्ते रूप के लाभ जानते तो हैं, आप दूसरो को फरिश्ता बनना सिखाते तो हैं, आप फरिश्ते रूप पर भाषण करते तो हैं, आप की जुबान में मिठास तो हैं, परन्तु अभ्यास नहीं हैं ।



-ज्यदातर आत्माएं 108 बार सिमरन करते हैं । परन्तु इस से बल नहीं बनता । बल बनाने लिए आप को दस हजार बार सिमरन करना ही होगा । यह नहीं कर सकते तो 3 घंटे योग का अभ्यास करना ही होगा । अगर यह भी मुश्किल लगता है तो 25 पेज अव्यक्त मुरली के पेज पढ़ने ही होंगे ।

-अगर जीवन में कोई भी मन वाणी और कर्म में कमी है तो रोना धोना बंद करके तुरंत फरिश्ता रूप का अभ्यास करो । नहीं तो बाबा परमधाम में बैठा रहेगा और माया खाती रहेगी । छोटी छोटी बातों पर आहत होते रहेगे ।

-फरिश्ता रूप समझने से हम उस मोड में आ जाते हैं जब हमारे शरीर के रोग ठीक होने लगते हैं ।

-योगी होते भी रोग ठीक नहीं हो रहे हैं तो इस का कारण यह है कि हम किसी ना किसी व्यक्ति से मानसिक रूप से आहत हो रहे हैं । आहत होने का कारण फरिश्ता रूप का अभ्यास दस हजार से कम है ।

शारीरिक रोग की दवाई तो लेते रहो परन्तु अपने अभ्यास को बढ़ाओ ।

-हजार काम छोड़ कर भी हम भोजन जरूर करते हैं । इसी तरह अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकाल कर या व्यस्त रहते भी फरिश्ता हूं फरिश्ता हूं ये संकल्प दोहराते रहो ।

-फरिश्ता रूप का अभ्यास करने से हम आकाश और वायु जो कि निराकार तत्व है हम इनसे जुड़ जाते है । हमारे में इन तत्वों की शक्तियां भी आने लगती है ।

-हवा हमारे बाहरी शरीर और आंतरिक शरीर को टच करती रहती है । फ़रिश्ता रूप समझने से जो तरंगे वायु को प्रभावित करती है । ये हवा जहां जहां जाएगी जिन जिन व्यक्तियों को स्पर्श करेगी वह व्यक्ति भी शांति का अनुभव करेगे । इस लिए बाबा कहते है निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी बनो ।

-फरिश्ता समझने से हमें अहंकार नहीं आएगा क्योकि हम निराकार आकाश तत्व से जुड़ जाते है । आकाश तत्व से हमें अनंत शक्तियां मिल जाती है । हमें किसी से कुछ लेने की आश ही नहीं रहती । हमारे मेंं दाता पन की भावना आ जाती है । दाता को अहंकार नहीं आता । इसी लिए बाबा कहते है निरअहंकारी बनो अर्थात फरिश्ता बनो । फ़रिश्ते को अहंकार नहीं आता ।

-फरिश्ता समझने से हमें किसी के शरीर के प्रति बुरे विचार, अपवित्रता के विचार नहीं उठते क्योकि हम प्रकाश रूप मेंं होते है और दूसरो को प्रकाश देखतें है । प्रकाश को प्रकाश से बुरे विचार नहीं आते । इस लिए बाबा कहते है निर्विकार भव अर्थात फरिश्ता स्वरूप भव ।

- कोई भी व्यक्ति, कोई भी संत, कोई भी समाज सेवक, कोई भी विज्ञानिक, कोई भी इंजिनियर, कोई भी अर्थशास्त्री, कोई भी राजनेता जो निष्काम भाव से विश्व कल्याण के कार्यों मेंं लगे हुए है हम उन से भी अनजाने .मेंं जुड़ जाते है । हमारी तरंगे उनको और उनकी तरंगे हमें प्रभावित करती है ।

-अगर हम फ़रिश्ता रूप में टिके रहे और कोई व्यक्ति मुसीबत में तो बाबा हमारे सूक्ष्म रूप का साक्षात्कार करवाएगा और उस व्यक्ति को म्रग दर्शन मिलेगा ।

-कोई भी व्यक्ति चिंता में होगा और हल के लिए सोच रहा होगा आप का रूप उसे दिखेगा और वह आप को ढूँढ निकालेगा ।

-इसलिए फरिश्ता रूप का जम कर अभ्यास करो । आप की सब मनोकामनाएं पूरी हो जाएगी ।

## आंतरिक बल 633

मन एक रेडियो स्टेशन है -6

-फ़रिश्ता स्वरूप का अभ्यास

-जब हम अपने आप को फ़रिश्ता समझते हैं तो हमारे दिमाग में एक ऐसा एंटीना है जिस से ऐसी शक्तिशाली तरंगें निकलती हैं जो उन लोगों को पहुंचने लगती हैं जिनके हम पूर्वज थे ।

-हमें पता नहीं होगा कि उन आत्माओं ने जिनके हम पूर्वज थे कहां जन्म लें रखा है । हमारे से निकली तरंगें उन्हें अपने आप ढूँढ लेती हैं ।

-यह सब ईथर तत्व के माध्यम से होने लगता है ।

-जिस मोबाइल नंबर पर हम डायल करते हैं उसे हमारे मोबाइल से निकली तरंगे अपने आप ढूँढ़ लेती हैं वह व्यक्ति विश्व में कहीं भी रह रहा हो ।

-पूर्वज अर्थात् हमारे मां-बाप , दादा-दादी, नाना-नानी, बेटा-बेटी, पति-पत्नी ।

-पूर्वज अर्थात् जिन का हमारे शरीर से संबंध है ।

-सूक्ष्म शरीर नहीं बदलता । उसकी शकल वही रहती है । सिर्फ स्थूल शरीर की शकल बदलती रहती है ।

-सूक्ष्म शरीर को हम मोबाइल नंबर कह सकते हैं । सारे विश्व में हमारा एक ही नंबर है । एक ही नंबर के दो मोबाइल नंबर नहीं होते ।

-जैसे ही हम अपने को फरिश्ता समझते हैं हमारे मन से निकली तरंगे हमारे पूर्वज पकड़ लेते हैं ।

पूरे कल्प में हम लगभग 80 हजार से एक लाख लोगो के बहुत नजदीक संबंध में आते हैं ।

-ये वे लोग हैं जो हर जन्म में हमारे मां-बाप, भाई बहिन, दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, बुआ फूफा, तथा कजिन भाई बहिन थे ।

-जहां हम पढ़ते थे वह टीचर, साथी विद्यार्थी तथा सत्संगी लोग और वहां के निमित्त व्यक्ति और गुरु आदि भी नजदीक की लिस्ट में आते हैं ।

-जहां हम ने रोजी रोटी के लिए कार्य किए वह व्यक्ति भी नजदीकी सूची में आते हैं ।

-इन में से काफी लोग तो हमें हर जन्म में मिलते रहते हैं । कुछ लोग बहुत दूर चले जाते हैं ।

-जितना हम फरिश्ता रूप में टिकेंगे और जितना हमारा योग अच्छा होगा और जितना हमारा मन पवित्र होगा उतना ही वह लोग जिनके हम पूर्वज हैं वह अनजाने में यह महसूस करने लगेंगे । उन्हें अच्छे फुर्ने ( प्रेरणा ) उठेंगे । वह भी प्रेरणा से स्थान ढूँढ़ कर हमारे सेवा केन्द्रों से जुड़ जाएंगे । अगर वह आश्रमों पर ना भी आ सकेगे तब भी बदलने लगेंगे ।

-अभी संसार नहीं बदल रहा है । हमारे नजदीकी लोग, हमारी क्लास के भाई बहिनें नहीं बदल रहे हैं ।

-इस का कारण यह है कि हम फरिश्ता रूप में टिक नहीं रहे हैं । अभी मन पवित्र नहीं है । एक दूसरे के प्रति भावनाएँ ठीक नहीं हैं ।

-अभी हमारी कथनी और करनी ठीक नहीं है ।

-भगवान को याद करने से पहली सिद्धि मनुष्य को मीठी ज़बान के रूप में मिलती है ।

-मीठी ज़बान तो सब राजयोगियों को मिल गई है । हम मीठी ज़बान से कार्य लें रहे हैं । हम सफल हो रहे हैं । परन्तु मन अभी पूरा शुद्ध नहीं है । इस लिए संसार या हमारे नजदीकी लोग बदल नहीं रहे हैं ।

-अगर संसार को बदलना है तो फरिश्ते रूप में टिको । जितना जितना मन शुद्ध होगा आप फरिश्ता बनते जाएंगे ।

-इस अभ्यास से हम सारे विश्व को एक स्थान पर रहते हुए बदल सकते हैं ।

## आंतरिक बल 634

-मन एक रेडियो स्टेशन है -7

-महर्षि अरविंद एक जगह बैठ कर विश्व को बदलते थे ।

-सर्व शक्तिवान परमपिता परमात्मा परमधाम में रह कर पूरे विश्व को चलाते हैं ।

-प्रधान मंत्री एक स्थान पर रह कर पूरे देश को चलाते हैं ।

-डिप्टी कमिश्नर एक जगह बैठ कर पूरे जिले को चलाता है ।

-ये सब इसलिए कर पाते हैं क्योंकि एक सिस्टम से जुड़ जाते हैं ।

-यह सारा संसार एक अदृश्य सिस्टम से चल रहा है ।

-जब हम फरिश्ता रूप में टिकते हैं तब अनजाने में हम अदृश्य नियमों से जुड़ जाते हैं और हमारे द्वारा क्रांतिकारी कार्य होने लगते हैं ।

-अगर हम फरिश्ता रूप में स्थित रहेंगे तो जो लोग भगवान को याद कर रहे हैं और भगवान को ढूँढ़ रहे हैं । बाबा उनको हमारा साक्षात्कार करवा सकते हैं ।

-जब हम फ़रिश्ता स्वरूप में स्थित रहते हैं और योग लगाते रहते हैं तो हमारी तर्क बुद्धि सुप्त हो जाती है ।

-फ़रिश्ता समझने से तर्क बुद्धि बहस नहीं करती ।

-यह नीद जैसी अवस्था होती है । नीद में हमारी तर्क बुद्धि शून्य हो जाती । हमें कुछ पता नहीं होता क्या हो रहा है ।

-जागृत अवस्था में नीद जैसी मानसिक दशा जब हो जाती है तो यही वास्तव में फ़रिश्ता स्थिति है ।

-जब हम अपने को फ़रिश्ता समझते हैं ऐसा मानसिक बल बनता है जिस से हमारा सूक्ष्म शरीर हमारी स्थूल बाडी से निकल कर समय और सीमा से परे ब्रह्मांड के किसी भी कोने, किसी भी युग में, अनंत भूतकाल में, अनंत भविष्य काल में यात्रा कर सकता है और प्रत्यक्ष अपने मन की आंखों से सब कुछ चित्र की तरह स्पष्ट देख कर आ सकता है ।

-इतना ही नहीं, इस अवस्था में अपने वर्तमान क्षणों में अपने घर, अपनी दुकान और देश में चल रही घटनाओं को साफ साफ देख सकते हैं ।

-इस अवस्था में चोरी अपराध एवं अन्य गुप्त छिपे हुए रहस्यों को भी जान सकते हैं ।

-इसे ध्यान की गहरी अवस्था भी कहते हैं ।

-असल में हमारी सभी समस्याओं का कारण हमारा चेतन मन है । यह हर बात में तर्क करता है । यह क्यों, क्या और कैसे करता है । अगर चेतन मन

तर्क छोड़ दे तो हम जो कुछ भी कल्पना में देखते व सोचते हैं वह दूरदर्शन की तरहसे स्पष्ट दिखेगा ।

-तर्क बुद्धि केवल योग से वश में आती है ।

## आंतरिक बल 635

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-एंटी टाइम तरंगे

-यह संसार 186000 मील प्रति सेकेंड की गति से चल रहा है ।

-अगर कोई ऐसी विधि हो जो हम 186000 मील की गति से समय के उल्टा चलने लगे तो संसार थम जाएगा ।

-इस पर विज्ञानिक खोज कर रहे हैं ।

-परन्तु हमारे मन से ऐसी तरंगे निकलती रहती है जो एंटी टाइम कार्य कर रही है ।

-हम सूर्य का जो प्रकाश देखते हैं यह 8 मिनट पुराना है क्योंकि सूर्य से धरती पर प्रकाश पहुंचने में 8 मिनिट लगते हैं ।

अरबो प्रकाश वर्ष लगते हैं ।

-परन्तु हम आंखो यां मन से एक सेकेंड में सूर्य यां आकाश को देख लेते हैं ।



-इस से सिद्ध है कि हमारे मन से ऐसी तरंगें निकलती हैं जो पलक झपकते ही अनंत दूरी तय कर लेती हैं। इस का मतलब यह है कि ये तरंगें समय की गति से तेज हैं। अतः हम कह सकते हैं कि मन की गति एंटी टाइम है।

-वास्तव में यह सच है।

-ईश्वर तत्व सारे ब्रह्मांड में व्यापक है। यह तत्व ध्वनि और संकल्पों का सुचालक है।

-हमारे दिमाग का वह भाग जहां हम सोचते हैं वहां ईश्वर है।

-हम जो कुछ सोचते हैं वह ईश्वर में ही सोचते हैं।

-इस का मतलब है कि हमारे सोचते ही हमारे संकल्प ईश्वर में प्रवेश कर के दूसरे व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं

-ईश्वर में प्रवेश करते ही संकल्पों की गति एंटी टाइम हो जाती है।

-ये नियम हरेक व्यक्ति में कार्य कर रहा है परन्तु इस के बारे कोई जानता नहीं है।

-ये जो हम सोचते रहते हैं और हम एक पल में देहली दूसरे पल अमेरिका और तीसरे पल नागपुर और चौथे पल हिसार पहुंच जाते हैं। हमारा मन हकीकत में यहां पहुंच गया था।

-परन्तु हमारी तर्क बुद्धि यह नहीं मानती कि हम सचमुच में पहुंचते हैं। अगर हम तर्क बुद्धि को सुला दे तो जो हम ने सोचा है मन में देखते हैं वह सचमुच में दिखने लगेगा।

-हिपनोटिज्म में तर्क बुद्धि का सोचना बंद कर देते हैं ।

-यह योग साधना, व्रत पूजा पाठ और कुछ नहीं हम अपनी तर्क बुद्धि को अपने वश में करते हैं ।

-तर्क बुद्धि बहुत हट्टी है । भगवान ने हरेक मनुष्य को बुद्धि दे रखी है । मनुष्य अपनी बुद्धि से ज्यादा कुछ नहीं मानता । आप उससे चाहे कितना समझा लो नहीं मानेगा ।

- आप किसी को कहो अच्छी सेहत के लिए सैर किया करो । वह व्यक्ति नहीं मानेगा । वह तभी मानेगा जब उसे कोई शरीरिक रोग घेर लेगा ।

-कई व्यक्ति चीनी बहुत खाते हैं । उन्हें आप कितना भी समझाओ कि ज्यादा चीनी से शुगर हो जाती है । कम खाया करो । वह नहीं मानेगा वह तब मानेगा जब कोई रोग उसे घेर लेगा और डॉक्टर कहे कि चीनी बंद करो ।

-बच्चो को पढ़ाई का महत्व समझ नहीं आता । जब उम्र बीत जाती है तब समझ आता है ।

-हमारी समस्याओ कि जड़ अज्ञानता हैं । अज्ञानता अर्थात कम बुद्धि । यह बुद्धि मानती नहीं । इसे मनवाना पड़ता है ।

-बुद्धि मानती है जब कोई बात हम बार बार रिपीट करें । पहली में पहाड़े याद करने लिए जोर जोर से क्लास के सभी विद्यार्थी इकट्ठे हो कर बोलते थे । वह पहाड़े हमें जीवन भर याद रहते हैं ।

-बुद्धि मानती है जब कोई चीज लिखी हुई हम पढ़ते हैं । यही कारण है पुस्तकें पढ़ने से बुद्धि विकसित होती है ।

-बुद्धि बदलती है योग/ध्यान साधना का अभ्यास करने से ।

-बहुत तीखा योग हो तब बुद्धि बदलती है ।

-थोड़ा बहुत यां चलते फिरते योग लगाने से बुद्धि नहीं बदलती । यही कारण है कि वर्षों से राजयोगी साधना कर रहे हैं परन्तु संस्कार बदले नहीं । पांच विकारों से वैसे के वैसे परेशान हैं जैसा पहले थे ।

-निरंतर कुछ .ना कुछ योग के साथ साथ पढ़ते भी रहो ।

-जीवन में कोई भी कमी कमजोरी यां बीमारी आदि हैं, कोई भी तन मन धन और संबंध कि कमी हैं तो इस का मतलब बुद्धि कमजोर हैं । इसे ठीक करने का साधन हैं पुस्तकें पढ़ना और योग लगाना ।

## आंतरिक बल -636

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं

-एंटी टाइम तरंगे

-अगर हम तर्क बुद्धि को जीत लें तो हम मन द्वारा जो कुछ सोचते हैं देखते हैं वह मनचाही चीजे हम प्राप्त कर लेगे और किसी भी स्थान पर हम एक पल में पहुंच जाएंगे ।

-कहते हैं श्री गुरुनानक देव जी में यह शक्ति थी । उसकी बहिन नानकी जब कभी उसे याद करती थी वह अपने शिष्य बाला और मर्दाना सहित तुरंत पहुंच जाते थे ।

-कई लोग मानते हैं कि शरीर सहित एक से दूसरे स्थान पर पहुंचना मुश्किल हैं ।

परन्तु यह तो हो सकता है कि वह सूक्ष्म शरीर से बहिन के पास पहुंच जाता हो और बहिन को ऐसा भ्रम हो जाता हो कि वह सचमुच में पहुंच गया था ।

-तर्क बुद्धि को जीतने के लिए बहुत तप की जरूरत है । यह एक असम्भव कार्य है ।

-परन्तु कुदरत अपनी शक्तियों को पाने का कोई ना कोई सहज उपाय भी छोड़ती हैं । उसे ढूंढना होता है ।

-सहज उपाय क्या है ?

-यह जो हम मन द्वारा यहा वहां जाते रहते हैं बस इसे मान लें कि सूक्ष्म स्तर पर यह सच में हो रहा है । दिमाग की इस शक्ति का उपयोग करना है । इसे समझना है ।

- जब कभी कोई गहरी चोट लगती है तो मनुष्य कोमा में चला जाता है या बेहोश हो जाता है ।

- वास्तव में जब असहनीय चोट लगती है तो ऐसी स्थिति में हमारा तर्क मन गहरे तल पर चला जाता है जहां बहुत शांति होती है । कई बार यह

इतना गहरा होता है कि वापिस नहीं आ सकता । जिसे हम कहते हैं फलाना व्यक्ति कोमा में चला गया है ।

-हमारे मन में शांति के बहुत गहरे तल हैं ।

-इसे हम ऐसे समझ सकते हैं कि सतयुग के पहले जन्म में सबसे ज्यादा शांति थी । दूसरे जन्म में उस से कुछ कम शांति थी । इसी तरह सतयुग के 8 जन्म और त्रेतायुग के 12 जन्म कुल 20 जन्मों तक आज की तुलना में बहुत ज्यादा शांति थी, हम निरोगी थे सर्वगुण सम्पन्न थे । इन सभी जन्मों की रेकॉर्डिंग हमारे मन में गहरे स्तर पर पड़ी हुई है ।

-अगर हम अपने मन को इन गहरे स्तरों पर लें जाए तो हमें वहां की अनुभूति होने लगेगी ।

-हमारा मन एंटी टाइम ट्रेवल करता है ।

-जब कभी मन में अशांति हो ।

-तब कहे ऐ मेरे मन सतयुग के पहले जन्म में चल जहां बहुत शांति है । यह सोचते ही हमारा मन वहां पहुंच जाता है । बस इस संकल्प को रिपीट करते रहो । आप इस संकल्प को 10 हजार बार एक दिन में रिपीट कर दो । तब आप को पहले जन्म की रेकॉर्डिंग में से अथाह शांति अनुभव होने लगेगी ।

-इसी तरह अपने मन को दूसरे, तीसरे से 8 वे जन्म में टिकाए आप को उन जन्मों की रेकॉर्डिंग से सुख शांति महसूस होने लगेगी ।

-ऐसे ही त्रेतायुग के 12 जन्मों में जाने का अभ्यास करें और वहां से शक्ति प्राप्त करें ।

-ऐसा करते समय बाबा के बिंदु रूप या इष्ट को सामने देखते रहे । इस से आप की शक्ति बढ़ जाएगी ।

-बाबा ने एक बार ऐसा प्रयोग किया था । कुछ बहिनो को एक कमरे में 7 दिन रखा था । उन्हें कमरे में सब सुविधाएँ दी गई थी । उन्हें बाहर किसी भी व्यक्ति को नहीं देखना था । उन्हें दिन रात योग करने को कहा गया ।

-वह बहिनें 2-3 दिन के बाद अपने को सतयुग में समझने लगी । उनकी उम्र ज्यादा थी । परन्तु वह अपने को छोटी छोटी राज कुमारियाँ समझती थी ।

-उनके सामने यज्ञ के भाई बहिनें जब आते थे तो उनका सतयुग वाला शरीर दिखता था । कई उनमें से दासी या नौकर दिखते थे तो कई राजा दिखते । वह भाई बहिनें सतयुग में जो बनने वाले थे उनका वह रूप उन्हें दिखता था ।

-अगर हम सतयुग की स्मृति में स्थित रहे तो हमारे को सभी व्यक्तियों का सतयुग वाला रूप दिखने लगेगा और हमारे में सतयुग वाले सारे गुण आ जाएंगे ।

-यह सब इत्थर के माध्यम से मन की एंटी ट्रावेलिंग तरंगों के कारण होता है ।

## आंतरिक बल -637

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम तरंगे

-जब हम कोई पास्ट की बात सोचते हैं, कोई घटना के बारे, किसी व्यक्ति के बारे या इतिहास के बारे, तो उस समय हमारे मानसिक एंटीना से एंटी टाइम तरंगे निकलती है ।

-पास्ट में जिस किसी के बारे सोचते हैं । सोचते ही हम वहां पहुंच जाते हैं । परन्तु यह बहुत गहरे स्तर पर हो रहा होता है । अगर हम उस विषय पर सोचते रहे तो उस समय की सारी चीजे हमारे दिमाग में आने लगोगी ।

-आप ने एक महीना पहले कोई पार्टी की थी । आज अगर आप से पूछे पार्टी में क्या हुआ था । तब आप पार्टी का ब्यौरा सील्स्लेवर देने लगोगे । ऐसे लगोगा जैसे आप के सामने अब पार्टी हो रही है । जब कि यह एक महीने पहले की बात है । सुनने वाला भी आप की बात मानेगा क्योंकि आप वहां उपस्थित थे ।

-सतयुग में हम सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण थे । अथाह सुख शांति थी । उस समय स्वर्ग था । निरोगी काया थी ।

-जीवन में सम्पूर्णता लाने के लिए आप अपने मन में सोचो मैं सतयुग में हूं और पहले जन्म में हूं । मैं स्वर्ग में हूं । बस इसे मन में दोहराते रहो । ऐसा

करते रहने से सतयुग के सारे गुण आप में आने लगेंगे । आप का शरीर भी ठीक होने लगेगा ।

-सतयुग के जन्मों की रेकॉर्डिंग हमारे अंदर बहुत गहरे अवचेतन मन में पड़ी हुई है । इसे ऊपर लाने में थोड़ा बल की जरूरत होती है ।

-समुन्दर से तेल निकालने लिए गहरा बोर करना पड़ता है ।

-धरती से पानी लेने के लिए नलका या ट्यूबवेल लगाना पड़ता है । इस के लिए भी बोर करना पड़ता है । बोर करने लिए हमें मशीनरी का सहारा लेना पड़ता है ।

-ऐसे ही सतयुग में मन को लें जाने लिए भी हमें ईश्वरीय बल का सहारा लेना पड़ता है ।

-अपने सामने कल्पना में परमात्मा के बिंदु रूप को देखो या अपने इष्ट को देखो । तथा मन में संकल्प करो मैं सतयुग के पहले जन्म में हूँ । मैं स्वर्ग में हूँ । मैं सतयुग में हूँ । इसे रिपीट करते रहो । धीरे धीरे स्वर्ग के सारे गुण आप में आने लगेंगे ।

-आप काम करते हुए, चलते हुए, खाते पीते, उठते बैठते यही संकल्प दोहराते रहो मैं स्वर्ग में हूँ । स्वर्ग में हूँ ।

-यह अभ्यास मन में करना है । मुख से नहीं बोलना । किसी से डिसकस नहीं करना । क्योंकि लोग इसे कोरी कल्पना कह कर आप का मनोबल तोड़ देंगे ।



- कहते हैं अगर 8 घंटे हर रोज योग लगाए तो तब हम इस अवस्था को पा सकते हैं । इसे मुक्ति की अवस्था कहते हैं । यह भी कहते हैं इस अवस्था को पाने लिए 7 जन्म लगते हैं ।

-परन्तु यह इतना मुश्किल नहीं है ।

-अगर आप एक दिन में 10 हजार बार इस संकल्प को रिपीट करते हैं कि मैं स्वर्ग में हूँ या अढ़ाई घंटे योग में इसी संकल्प को रिपीट करते हैं तो आप को एक दिन में ही अजीब सा अनुभव होगा । आप का आंतरिक विकास होने लगेगा ।

-अगर आप समझते हैं यह भी मुश्किल है । तब

-आप जितना समय बैठ सकते हैं बैठ कर अभ्यास करो मैं स्वर्ग में हूँ । फिर चलते फिरते जब भी याद आए बस इसी संकल्प को रिपीट करना है । यह अभ्यास 6 मास तक करना है । 6 मास बाद आप के जीवन में सतयुगी गुण अपने आप आ जाएंगे । अभी मनुष्य में क्रोध, लोभ, मोह अहंकार जैसे विकार अपने आप थोड़ी सी परिस्थिति होने पर आने लगते हैं । इस अभ्यास से कोई भी परिस्थिति आने पर मन में सदा शांति बनी रहेगी और हम भड़केगे नहीं । हम आराम से कार्य करेंगे ।

-यह सब इस लिए होता है क्योंकि मन की एंटी ट्रावेलिंग तरंगों से सतयुग में पहुँच जाते हैं और उसी स्थिति अनुसार प्रदर्शन करते हैं ।

## आंतरिक बल 638

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-एंटी टाइम तरंगे

-आज हरेक व्यक्ति किसी ना किसी रोग से पीड़ित है ।

-रोगो का कारण कोई ना कोई विकार है ।

-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और आलस्य आदि मुख्य विकार है ।

-आप के मन में कौन सा विकार ज्यादा है । बस वही विकार बीमारी का कारण है । क्योकि जब कोई विकार मन में बहुत लम्बे समय तक उठता रहता है वही बीमारी बन कर हमारे सामने आ जाता है ।

-इन विकारों की शुरुआत द्वापर युग से हुई है । इस से पहले कोई विकार नहीं था । द्वापर से कलयुग तक 63 जन्म के विकार हमारे अवचेतन मन में भरे हुए है ।

-विकारों को खत्म करने लिए हम राजयोग का अभ्यास करते है । योग की गहराई ना होने कारण ये विकार खत्म नहीं हो पा रहे । योग के लिए ज्यादा समय नहीं निकाल पाते । बाबा कहते है 8 घंटा योग लगाओ, 8 घंटा काम करो और 8 घंटा नींद करो ।

- हकीकत में 8 घंटा योग लगाना मेहनत है ।

-इन विकारों को खत्म करने के लिए हमें मन की आन्टी टाइम ट्रेवल शक्ति का प्रयोग भी करना चाहिए ।

--सिर्फ सोचो मैं द्वापर युग के पहले जन्म में हूँ । आप के सोचते ही आप का मन अपनी एंटी टाइम ट्रेवलिंग तरंगो से तुरंत द्वापर युग में पहुंच जाता है ।

-कल्पना में अपने द्वापर युग के पहले जन्म के मां बाप, भाई बहिनो को, चाचा चाची, स्कूल या कॉलेज के टीचर्स और स्टूडेंट्स को देखो, जिन लोगो से काम धंधे के दौरान मिले उन्हें देखो । इस के इलावा और दूसरे अड़ोसी पड़ोसी जिन के सम्पर्क में पूरे जन्म में आए । इन सब को भगवन को सामने देखते हुए कहो आप शांत स्वरूप है । आप शांत स्वरूप हैं । ये अभ्यास कम से कम 10 मिनिट जरूर करना है ।

-ऐसा अभ्यास करने से जिन लोगो से हमारे कार्मिक हिसाब किताब बने । वह हिसाब किताब वहां से खत्म होना शुरू हो जाएंगे ।

-इस तरह द्वापर के दूसरे जन्म के लोगो को तरंगे दो ।

-अगले दिन द्वापर युग के तीसरे जन्म के लोगो को तरंगे दे ।

-इस तरह द्वापर के चौथे पांचवे और 21वे जन्म के लोगो को तरंगे दो ।

-ऐसे ही कलयुग के प्रत्येक जन्म के लोगो को एक एक दिन तरंगे देते रहो ।

-योग के सथ साथ इस ढंग से हम अपने पुराने जन्मो में बने हिसाब किताब को सहज ही खत्म कर सकते है ।

- इस ढंग से हम बहुत जल्दी सर्वगुण सम्पन्न 16 कला संपूर्ण बना जाएंगे ।
- हिपनोटिज्म में ऐसे ही पुराने जन्मों में लें जाते हैं और रोगों का उपचार करते हैं ।
- हिपनोटिज्म ज्यादा से ज्यादा पिछले 7 जन्म तक जा सकते हैं । इसके आगे रिस्क होता है । हो सकता आत्मा वापिस ही ना आए और व्यक्ति पागल बना कर रह जाए ।
- मन की एंटी टाइम तरंगों का प्रयोग करने से कोई नुकसान नहीं । लाभ ही लाभ हैं ।
- जिन लोगों से अनबन हैं । इन के लिए भी एंटी टाइम तरंगों का प्रयोग करो ।
- मन में सोचो ऐ मन उस जन्म में चल जिस जन्म से अमुक आत्मा से मेरा हिसाब किताब शुरू हुआ । ऐसा सोचते ही आप का मन वहां पहुंच जाएगा । अब बाबा को मन में सामने देखते हुए उस समय जो व्यक्ति से गलत व्यवहार किया थे उसे ठीक कर दो । मान लो उस समय इसे चामाटा मारा था । अब उसी समय चामाटा मारने के बजाय इस की थोड़ी हाथ लगाओ और कहो मान जाओ । यह शब्द उसके दिमाग की हीलिंग कर देगा और वर्तमान में आप से अच्छा व्यवहार करेगा ।
- जब तक विरोधी से संबंध ठीक नहीं हो जाते यह अभ्यास जरूर करना है ।

## आंतरिक बल 639

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं ।

-एंटी टाइम तरंगे

-जब हम बाबा ( भगवान ) को याद करते हैं तो उस समय मानसिक रेडियो से एंटी टाइम तरंगे निकलती हैं जो ईथर के माध्यम से परमधाम में बाबा के पास पहुंच जाती हैं ।

-योग का मतलब बाबा को देखते रहो । यह देखना भी इसके पीछे विज्ञानिक कारण हैं ।

--हमारे मोबाइल को गुगल हमारे से दूर होते हुए अपडेट करता रहता हैं । क्योकि गुगल के पास प्रोग्रामिंग होती हैं ।

-हमारी आत्मा की प्रोग्रामिंग में वायरस आ गया हैं ।

-बाबा को मन में देखते रहने से बाबा के सारे गुण सारी शक्तियां हमारे में आ जाती हैं अर्थात हमारी प्रोग्रामिंग हो जाती हैं ।

- इसी सिद्वांत पर आधारित मन की एंटी टाइम तरंगो द्वारा हम भूतकाल में जो लोग थे उन जैसे बन सकते हैं ।

-आप महात्मा बुध, क्राइस्ट, गुरु नानका देव को याद करें, उन्हे कल्पना में देखे तो हमारी एंटी टाइम तरंगे कल्पना में देखते ही उन से सम्पर्क कर लेती हैं । बस उन में मन लगाए रखे तो उनके सारे गुण आप में आ जाएंगे ।

-आप चाणक्य जैसा बनना चाहते हैं उसे मन में हर समय देखते रहे । धीरे धीरे उसकी बुद्धिमत्ता आप में आ जाएगी ।

-आप बीरबल जैसा बनना चाहते हैं तो उसे कल्पना में देखते रहे आप में उस जैसी चतुरता आ जाएगी ।

-आप अशोक महान को देखते रहे तो उन जैसे महान बनने लग जाएंगे ।

-आप भक्त सिंह जैसा बनना चाहते हैं । सिर्फ उसे मन में देखते रहें आप उस जैसे क्रांतिकारी बन जाएंगे ।

-आप जिस व्यक्ति या महापुरुष जैसा बनना चाहते हैं बस उसे कल्पना में देखते हुए अपने कार्य करते रहे । आपका दिमाग उन जैसा बन जाएगा ।

-ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारी मानसिक तरंगे उन के दिमाग से जुड़ जाती हैं उनकी सारी बुद्धिमत्ता हमारे में आने लगेगी ।

-परन्तु यह बहुत लंबा प्रोसेस है ।

-एक व्यक्ति के माइंड में लगभग 9.50 खरब सेकेंड की रेकॉर्डिंग होती है । उसे हमारे दिमाग में डाउनलोड होने में लंबा समय लगता है ।

-कई भाई बहिनें पूछते हैं यह अभ्यास कब तक करना है । इस का उत्तर है जब तक हम भोजन खाएँगे तब तक यह अभ्यास करना होगा ।

-इसलिए अपना कार्य व्यवहार करते हुए बाबा को या इष्ट को या महान व्यक्ति को मन में सिर्फ देखते रहे ।

-आप आइंस्टाइन को मन में देखते रहे तो आप भी उन जैसे बुद्धिमान बन जाएंगे ।

-आप विक्रमादित्य, अकबर महान, सिकंदर महान को मन में देखते रहे तो आप भी उन जैसा बन जाएंगे ।

-आप मुंशी प्रेम चंद को मन में देखते रहें तो आप भी उन जैसे लेखक बन जाएंगे ।

-आप वेद व्यास को मन में देखते रहें तो आप भी उन जैसे महा ज्ञानी बन जाएंगे ।

-महान न बनने का कारण यह है कि वर्तमान समय जो हमारे विरोधी है, हमारी एंटी टाइम तरंगे उन से टकराती रहती है । ऊपर से एकता है, मीठा बोलते हैं, अपनी ड्यूटी भी करते रहते हैं, साथ साथ रहते हैं परन्तु मन से एक दूसरे से टकराते रहते हैं ।

-यह टकराव तब खत्म होता है जब हम बुक्स पढ़ते हैं ।

- अगर बुक्स नहीं पढ़ते तो जरूर किसी न किसी से टकराते रहेगे, वर्तमान के नहीं तो भूत काल में जिन लोगो ने विरोध किया उन से टकराते रहेगे । इस तरह अपनी शक्ति नष्ट करते रहेगे । यही मनुष्य के पतन का कारण बन जाता है ।

-ईमानदारी से चेक करो क्या इस समय मन में किसी से टकरा रहा हूं । अगर हां तो तुरंत मनसा सेवा पर कोई बुक पढ़ो । हजार बहाने कर के पढ़ने के लिए समय निकलो तथा मन से किसी न किसी को प्यार देते रहो ।

## आंतरिक बल 640

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं

-एंटी टाइम तरंगे और विश्व सेवा

-जो लोग हमारे आसपास रहते हैं उन्हें कोई बात कहनी हो या संदेश देना हो तो हम मुह से धीरे धीरे शब्द बोलते हैं 1

-व्यक्ति थोड़ा सा दूर हो तो हम जोर से बोलते हैं ।

-ज्यादा लोगो को कोई 'बात कहनी' हो तो हम लाउड .स्पीकर का प्रयोग करते हैं ।

-दूसरे शहर या दूसरे देश में संदेश भेजना हो तो हम मोबाइल, वायरलेस, इंटरनेट या रेडियो, टी .वी .आदि प्रयोग करते हैं ।

-रेडियो तरंगो से हम स्पेस में राकेट में बैठे लोगो को संदेश लेते और देते हैं ।

- ऐसे ही लोगो को भगवान का परिचय हम व्यक्तिगत रूप से देते हैं । क्लास या पब्लिक प्रोगाम में माइक प्रयोग करते हैं ।

- इन विधियों से हम बहुत कम संदेश दे पा रहे हैं ।

-81 वर्ष में हम करीब 20-25 लाख लोगो को ईश्वरीय ज्ञान समझा पाए ।

-लगभग 800 करोड़ आत्माओ को संदेश देना और उनकी पालना करना आसान काम नहीं हैं ।



-जो लोग योग का अभ्यास कर रहे हैं वह भी अपना आंतरिक बदलाव बहुत कम कर पाए हैं ।

-हमारे मन में एंटी टाइम ट्रावेलिंग तरंगे हैं जिनके द्वारा हम घर बैठे पूरे विश्व की सेवा कर सकते हैं ।

-ये वंडरफुल तरंगे हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति में हैं । इनकी समझ न होने के कारण हम अपनी शक्तियों को नष्ट कर रहे हैं ।

-जब भी हम किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या परमात्मा के बारे सोचते हैं, ये तरंगे सोचते ही वहां पहुंच जाती हैं ।

- आप ने महसूस किया होगा हमारी जरा सी भी किसी व्यक्ति से अनबन हो जाए तो हम परेशान हो जाते हैं ।

-बाबा कहते हैं अगर एक भी आत्मा आप से असंतुष्ट है तो निरंतर योगी नहीं बन पाएंगे ।

-ऐसा क्यों होता है ।

-इस के पीछे गहरा रहस्य है ।

-जब किसी भी एक व्यक्ति को देखते तो वह एक नहीं होता उसके पीछे बहुत ज्यादा व्यक्ति होते हैं ।

-ब्रह्मा कुमरीज मानती है कि एक व्यक्ति के ज्यादा से ज्यादा 84 जन्म होते हैं ।

-एक व्यक्ति पूरे 84 जन्मों में लगभग 80 हजार लोगों के बहुत करीब से सम्पर्क में आता है । गणना के लिए इसे हम लगभग एक लाख मान लेते हैं ।

-एक लाख व्यक्तियों से जो संबंध रहें वह रेकॉर्डिंग हमारे अवचेतन में बहुत गहरे स्तर पर सुरक्षित हैं ।

-जब हम किसी व्यक्ति से बुरा व्यवहार करते हैं तो यह संदेश 1 से 3 मिनिट के अंदर शरीर की प्रत्येक कोशिका को प्राप्त होता है । उन कोशिकाओं के द्वारा उन सब व्यक्तियों को संदेश जाता है जो उसे पूरे 84 जन्मों में मिले थे । वे व्यक्ति इस समय विश्व के अलग अलग स्थानों में जन्म ले कर रह रहे हैं । जैसे ही उनको ये संदेश जाता है वह रिएक्ट करते हैं । उनका यह रिएक्शन हमारी कोशिकाओं को प्राप्त होता है । हमारी कोशिकाएं हमारे मन को बल देती हैं । हमारा मन जिस व्यक्ति ने हमें अपशब्द कहे हैं उसका विरोध करता है । जिस की महसूसता दुरुव्यवहार करने वाले को होती है ।

-इस लिए कोई भी व्यक्ति आप देखते हैं उसे अकेला न समझे उसके साथ एक लाख लोग हैं । आप के प्रत्येक व्यवहार पर एक लाख लोग प्रतिरोध करते हैं ।

-अगर दूर बैठे किसी एक व्यक्ति के प्रति बुरा सोचते हैं तब भी एक लाख लोग विरोध कर रहे हैं ।

-यह सब हमारे मन में स्थित एंटी टाइम तरंगों के कारण होता है ।

-इस लिए कोई भी व्यक्ति सामने आए या मन में आए उसके बारे अच्छा सोचे और बाबा को देखते हुए उसके प्रति सोचे । आप का यह संदेश उन से संबंधित एक लाख लोगो को जाएगा । फिर उन एक लाख लोगो का आगे एक एक लाख लोगो को जाएगा । इस तरह ये संसार बहुत तीव्र गति से बदलेगा ।

-अभी सभी व्यक्ति तनाव में रहते है या योगी भी मानसिक क्लेश में रहते है क्योकि वे मन में जितने लोगो से व्यर्थ व्यवहार करते है उतने लाख लोगो की बददुआए उन्हे मिलती रहती है ।

-नामी ग्रामी योगी बीमार इस लिए है क्योकि वह अपने से छोटे भाई बहिनो से बुरा व्यवहार करते है, कमजोरी के बोल बोलते है जिस से छोटे व उन पर निर्भर लीग आहत होते है और उनकी आहत वाली एनर्जी एक लाख बढ़ कर रीएक्ट करती है ।

-कोई भी व्यक्ति भाई या बहिनें दिखाई दे दुर से ही बाबा को सामने देखते हुए आप जैसे विश्व के भाई और बहिनें शांत स्वरूप है प्रेम स्वरूप है । आप का यह संकल्प पूरे विश्व को पहुचेगा ।

-ऐसा करते हुए भगवान के बिंदु रूप को मन में देखते रहें ।

## आंतरिक बल 641

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम तरंगे और विश्व सेवा

-हम विश्व के किसी भी कोने में चले जाए हमारा वाट्स अप और फेस बुक अकाउंट कभी चेंज नहीं होता । हम इनके माध्यम से सारे संसार से जुड़े रहते हैं । जो लोग हमारे ग्रुप में हैं उनको भेजे गए संदेश सदा ही मिलते रहेंगे ।

-ऐसे ही हमारा मन एंटी टाइम ट्रेवल तरंगों के माध्यम से हमारे पिछले जन्म के सभी लोगों से जुड़ा रहता है । हमारे मन में जो भी विचार आता है उसका अच्छा या बुरा प्रभाव पिछले जन्म के लोगों को होता रहता है बेशक इस समय अलग अलग नाम रूप से उन्होंने जन्म लें रखा है ।

-वर्तमान में कोई भी एक व्यक्ति जो आप के सामने आता है हम उस एक को तो प्रभावित करते ही हैं । उस से जुड़े उसके पिछले जन्म के करीब एक लाख लोगों को भी प्रभावित करते हैं ।

- कोई भी व्यक्ति जो आप के सम्पर्क में आता है, साथ रहता है या मन में याद आता है चाहे विरोधी आत्मा हो, तुरंत बाबा को मन में सामने लाओ और उस व्यक्ति को कहो आप शांत स्वरूप हो, शांत स्वरूप हो, आप का यह संकल्प उस से जुड़े पिछले जन्मों और इस जन्म के जुड़े सभी लोगों को पहुंच जाता है ।

-अभी संसार क्यों नहीं बदल रहा है इस की हकीकत तो यह है कि हमारे मन में दूसरों के प्रति भाव अच्छे नहीं हैं ।

- हरेक व्यक्ति के प्रति अपने भाव बदलो । तब विश्व बदलेगा । तभी कहते हैं आप भले तो जग भला ।

-जब आप घर से बाहर जाते हैं और कोई रिक्शे वाला देखो तो उसको देखते हुए मन में सोचो आप जैसे विश्व के सभी रिक्शे वाले भाई शांत स्वरूप हैं, प्रेम स्वरूप हैं, सुख स्वरूप हैं । आप का यह संकल्प विश्व के सभी रिक्शा वालों को पहुंच जाएगा ।

-आप किसी सब्जी बेचने वाले को देखते हैं तो मन में उसे कहो आप जैसे विश्व के सभी सब्जी वाले शांत स्वरूप हैं प्रेम स्वरूप हैं आप का यह संदेश विश्व के सभी सब्जी विक्रेताओं को मिल जाएगा ।

-किसी कपड़ा बेचने वाले आदमी को देखते हैं तो उसे देखते ही मन में सोचो आप जैसे विश्व के सभी कपड़ा व्यापारी शांत स्वरूप हैं प्रेम स्वरूप हैं । आप का यह संकल्प विश्व के सभी कपड़ा व्यापारियों को मिल गया है ।

-किसी ड्राइवर को देखते, किसी मोची को देखते हैं या किसी भी प्रोफेशन के व्यक्ति को देखते हो तुरंत मनसा सेवा करो सिर्फ सोचो कि उस जैसे विश्व के सभी भाई शांत स्वरूप हैं प्रेम स्वरूप हैं । आप का यह संकल्प उन सब को मिल रहा है ।

-अगर आप किसी बहिन को देखते हैं तो सोचो आप जैसी विश्व की सभी बहिनें शांत स्वरूप हैं, प्रेम स्वरूप हैं, सुख स्वरूप हैं तो आप का यह संकल्प विश्व की बहिनो को मिल जाएगा ।

-किसी छोटी लड़की को देखे तो मन में सोचो आप जैसी मानसिक फ्रेक्वेणसी वाली लड़कियां शांत स्वरूप हैं, प्रेम स्वरूप हैं, सुख स्वरूप हैं । आप का यह संकल्प उन सब लड़कियों को पहुंच जाएगा ।

- ऐसे ही कोई भी बीमार व्यक्ति को देखते ही सोचो आप जैसे विश्व के सभी रोगी भगवान की शक्ति से ठीक हो रहें है तो आप के यह संकल्प विश्व के रोगियों को ठीक कर देगा । उन में बल भर देगा ।

-ये संकल्प उस जैसे अन्य व्यक्तियों को क्यो पहुंचते हैं ।

-इस का कारण यह हैं हरेक व्यक्ति अपनी एक फ्रेक्वेणसी पर सोचता हैं । जो व्यक्ति एक फ्रेक्वेणसी पर होते हैं वे एक दूसरे की तरंगे पकड़ते हैं ।

-जो लोग एक जैसा काम करते हैं ज्यादातर उन की मानसिक फ्रेक्वेणसी एक जैसी होती हैं ।

## आंतरिक बल 642

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं ।

- एंटी टाइम तरंगे और विश्व सेवा

- वर्तमान समय में इंटरनेट संदेशो के आदान प्रदान का सब से आसान और सस्ता साधन हैं ।

- पूरे विश्व में अगर संदेश पहुंचाना हो तो हमें व्हाट्सअप या फेस बुक पर जुड़ना पड़ेगा

-व्हाट्स अप के किसी ग्रुप से जुड़ जाए तो हमारा संदेश उस ग्रुप के सभी लोगो को एक पल में मिल जाएगा ।

-यही सिस्टम आत्माओ की दुनिया में हैं ।

-परमधाम में बाबा के पास एक सुपर कंप्यूटर हैं । इस कंप्यूटर से विश्व की सभी आत्माएं जुड़ी हुई हैं ।

-हम जो कुछ सोचते हैं वह पहले परमधाम भगवान के पास सुपर कंप्यूटर में जाता है वहां से संदेश उस व्यक्ति को जाता है जिस के बारे हम ने सोचा है । परन्तु यह एक क्षण में हो जाता है । इसलिए हमें पता नहीं चलता ।

- सभी धर्म पिता, गुरु, संत, महात्मा, तथा वर्तमान सभी धार्मिक संस्थाओं के मुखिया व्यक्ति भगवान के पास जो सुपर कंप्यूटर हैं उसमें जुड़े हुए हैं ।

-कोई भी व्यक्ति जैसे ही अपने गुरु को याद करता है उसका यह संकल्प भगवान के पास पहुंच जाता है । वहां से भगवान उनको उनकी भावना को पूरा करता है ।

-परमधाम को एक सूक्ष्म लेयर कह सकते हैं व्यक्ति का हर बोल संकल्प वहां जाता है । उस लेयर से टकरा कर उस व्यक्ति या व्यक्तियों को पहुंचता है जिस के बारे हम सोचते हैं ।

-अगर हम बाबा को सामने रखते हुए श्री कृष्ण को तरंगे देते हैं तो हमारे संकल्प उन सब लोगो को पहुंच जाएंगे जो श्री कृष्ण को भगवान मान कर याद करते हैं । यहा श्री कृष्ण एक ग्रुप की तरह हैं । जब उन्हें तरंगे देते हैं तो उन सब लोगो को संदेश मिलेगा जो श्री कृष्ण के भक्त हैं ।

-ऐसे ही विश्व के जितने भी साधु संत, महात्मा, गुरु, पीर पैगम्बरों और देवियों को भगवान को देखते हुए तरंगे देगे तो यह उन सब लोगो को भी पहुंचेगी जो लोग उन्हें अपना गुरु मानते हैं ।

-इसके लिए हमें सिर्फ इतना कार्य करना है जिन जिन गुरुओं को हम जानते हैं उन्हें मन में ऐमेर्ज करो और बाबा को बीच में देखते हुए धीरे धीरे अच्छे शब्द बोलने हैं ऐसे समझते हुए कि वह आप के सामने बैठे हैं । आप का यह विचार उन के शिष्यों को भी मिल जाएगा

-आप के मोहले में जो मंदिर, गुरुद्वारा आदि हैं उसके पुजारी को तरंगे देने से उस पुजारी में श्रद्धा रखने वाले लोगो को तरंगे द्वारा संदेश पहुंच जाएगा ।

- मान लो आप पुजारियों को नहीं जानते हैं तब सिर्फ इतना कहे कि फलाने मंदिर के पुजारियों और उस मंदिर में जाने वाले लोगो का कल्याण हो । आप की एंटी टाइम तरंगे उन सब लोगो को ढूंढ लेती हैं और आप का यह विचार उन सब को पहुंचेगा ।

-ऐसे आप पूरे विश्व में जिन पुजारियों या गुरुओं को जानते हो, चाहे उन्हे टी. वी . पर देखा हो उन्हे मानसिक तरंगे दे । आप की यह तरंगे उन सब लोगो को पहुंचेगी और वह बाबा का बनने के लिए प्रेरित होंगे ।

-हमारे मन में स्थित एंटी टाइम ट्रेवलिंग तरंगो की यह विशेषता होती है कि यह किसी व्यक्ति की फोटो को देखते ही, वह फोटो चाहे टी वी. , अखबार, व्हाट्सअप या फेस बुक में देखा हो, उसे पूरे ब्रहमांड में सर्च करने लगती है और उस व्यक्ति से क्वेण्टम लेवल पर जुड़ जाती है और उसे प्रेरित करती है ।



-विश्व के सभी संत और गुरु अप के सामने हैं कल्पना में महसूस करो बीच में बाबा को देखो और आराम से कहो अप कल्याणकारी हैं अप शांत स्वरूप हैं । यह ऐसे ही बोलना हैं जैसे कोई व्यक्ति पास में हो और उसे हम कहते हैं भाई एक ग्लास पानी लाओ । आप का संकल्प सब संतो ने तथा उनसे जुड़े लोगो ने सुन लिया हैं ।

## आंतरिक बल 643

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम तरंगे और विश्व सेवा

-बाबा ने कहा है जो विश्व सेवा करेगा वह विश्व महाराजा बनेगा और नए बच्चे भी नंबर लें सकते हैं । यह भी इशारा दिया है कि मंसा सेवा पर विशेष ध्यान देने से होगा ।

-सभी राजयोगी विश्व सेवा के कार्य में लगे हुए हैं परन्तु 81 साल में अभी तक 20-25 लाख लोगो को हम राजयोगी बना सके हैं । सवाल उठता है आखिर विश्व की सेवा कैसे करें कि सभी जल्दी जल्दी भगवान को पहचान सके ।

- हमारे दिमाग में एक ऐसा केन्द्र है जिस से एंटी टाइम तरंगे निकलती है जो एक क्षण में कहीं भी पहुंच जाती है और तुरंत परिवर्तन आरम्भ कर देती है । इन तरंगो का प्रयोग हमें सीखना चाहिये ।

-अगर हम भारत के लोगो का जीवन बदलना चाहते है तो हमें भारत के प्रधान मंत्री को तरंगे देनी चाहिए । प्रधान मंत्री की सोच सारे भारत को प्रभावित करती है । प्रधान मंत्री देश के कल्याण के लिए सोचता रहता है । इसलिए प्रधान मंत्री की फोटो कल्पना में देखो और बीच में बाबा या इष्ट को देखो और बाबा को कहो आप प्यार के सागर है प्यार के सागर है शांति के सागर है शांति के सागर है । ये तरंगे प्रधान मंत्री को पहुंचेगी और वह ऐसी कल्याणकारी स्कीमें बनाएगा जिस से पूरा भारत खुशहाल बनेगा ।

-ऐसे ही दूसरे देशो के प्रधान मंत्रियों को जिन्हे आप ने टी .वी याँ अखबार आदि में देखा है उन्हे तरंगे दो । आप की इन तरंगो से वह प्रेरित होंगे और अपने देश के लिए कल्याण का सोचेंगे और विश्व बदलने लगेगा ।

-भारत के प्रधान मंत्री को सामने देखो और मन में कहो आप जैसे विश्व के सभी प्रधान मंत्री शांत स्वरूप है, प्रेम स्वरूप है, आप सभी कल्याणकारी है । ऐसा करते समय बाबा को भी बीच में रखना है । आप के यह विचार एंटी टाइम तरंगे बन कर सभी प्रधान मंत्रियों और उनसे जुड़े सभी व्यक्तियों को प्रेरित करेगे । इस विधि से आप के विचार विश्व की प्रत्येक आत्मा को प्रभावित करेगे ।

-ये तरंगे व्हाट्सअप ग्रुप की तरह सब को पहुंचती है । सभी प्रधान मंत्री एक ग्रुप है ।

-अब भारत के राष्ट्रपति को सामने इमर्ज करो और कहो आप जैसे विश्व के सभी राष्ट्रपति शांत स्वरूप है, प्रेम स्वरूप है कल्याणकारी है । क्योंकि आप

बाबा को याद करते हुए ये कह रहे हैं तो बाबा की शक्ति आप की एंटी टाइम तरंगों में प्रवेश कर जाती है और पूरे विश्व की आत्माओं को प्रेरित करती है तथा राष्ट्रपति कल्याणकारी कानून बनाते हैं और कल्याणकारी स्कीम पास करते हैं ।

-अपने राज्य का कल्याण करने लिए अपने राज्य के मुख्यमंत्री को तरंगों दे । मुख्य मंत्री अपने राज्य को प्रभावित करेगा ।

-अपने जिले का कल्याण करने के लिए अपने जिले के डिप्टी कमीशनर को तरंगों दो । आप अपने क्षेत्र में जो करवाना चाहते हैं डी . सी को कल्पना में कहे । आप के विचार उस तक पहुंचेंगे और वह सही कार्य करेगा ।

-शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए अपने क्षेत्र के शिक्षा मंत्री और विश्व विद्यालयों के वाइस चांसलरस को तरंगों दो । आप के विचार उन्हें शिक्षा में सुधार के लिए प्रेरित करेंगे ।

-कानून व्यवस्था को सुधारने लिए राज्य के पोलीस डायरेक्टर और ग्रहम्पत्री को बाबा को सामने रखते हुए तरंगों दो । आप के विचार उन्हें प्रेरित करेंगे और कानून का पालन करेंगे ।

-दुनिया में कोई भी सुधार आप चाहते हैं, उस काम के लिए कौन जिम्मेवार हैं उन्हें तरंगों देते रहो । आप के मनचाहे कार्य होने लगेंगे ।

-हिमालय में बैठे योगी आज भी अपने योग बल से विश्व को प्रेरित कर रहे हैं ।

-ऐसे ही आप भी विश्व में किसी ना किसी को प्रेरित करते रहो जी ।

-आप जितने लोगो को प्रेरित करते हैं उतने क्षेत्र के राजा बनेगे ।

-यह संसार मेल और फीमेल से बना हैं ।

-बाबा को सामने देखते हुए कहें विश्व की सभी बहिनें आप शांत स्वरूप हैं प्रेम स्वरूप हैं । आप का यह संकल्प विश्व की सभी बहिनो को पहुंचेगी ।

-बाबा को याद करते हुए कहें विश्व के सभी भाई आप शांत स्वरूप हैं, प्रेम स्वरूप हैं और विश्व के भाइयो की लंबी लाइन अपने सामने देखे । आप का संकल्प विश्व कि हरेक आत्मा को पहुंच रहा हैं ।

-उपरोक्त दो विधियां सर्व श्रेष्ठ हैं । इस से आप का प्रत्येक संकल्प विश्व की प्रत्येक आत्मा को माइंड की एंटी टाइम तरंगो के कारण से मिलता रहेगा । इन तरंगो पर खोज की जरूरत हैं । परन्तु यह सचमुच में पहुंचती हैं । आप को संशय में नहीं होना की ऐसे कैसे होता हैं । इस विधि से आप मनसा सेवा करो देखना एक दिन में ही बहुत अच्छा लगेगा । आप के ये संकल्प बहुत गहरे तल पर काम करते हैं । उन लोगो को शब्द तो समझा नहीं आएंगे परन्तु उन्हें अच्छा अच्छा लगेगा, खुशी होगी, कल्याणकारी विचार उठने लगेगे ।

## आंतरिक बल 644

-मन एक रेडियो है

-एंटी टाइम तरंगो और महत्व पूर्ण बनने की भावना

-मानव स्वभाव की सब से बड़ी जरूरत यह है कि वह महत्वपूर्ण अनुभव करना चाहता है ।

-महत्वपूर्ण बनने की भावना भूख से भी ज़्यादा ऊंची होती है ।

-यह प्रेम से भी ऊंची होती है ।

-यह सब से प्रबल मानवीय इच्छा है ।

-इसी लिए हम दरवाजे की नेम प्लेट पर उपाधियां लिखवाते है ।

-किसी से संबंध तोड़ने का मुख्य कारण प्रशंसा का अभाव है ।

-महत्व पाने और सराहे जाने की इच्छा सब से शक्तिशाली होती है ।

-लोगो की दिलचस्पी सिर्फ और सिर्फ खुद में होती है । इसमे मेरे लिए क्या है ।

-हमारा हर काम आत्म रुचि या स्वार्थ द्वारा प्रेरित होता है ।

-गोपनीय दान करने के बावजूद भी आप को उसका पुरस्कार मिल ही जाता है ।

-दूसरो से यह अपेक्षा न रखे कि दूसरे लोग अपने में रुचि लेना छोड़ दे ।

- हम सभी अपने स्वार्थ को सब से पहले रखते है ।

-इंसान के मन में एक प्रबल इच्छा होती है कि उसे जो दिया गया है वह भी बदले में उतने ही मूल्य की कोई चीज लौटाए ।

-आप ने किसी को उसकी कोई मन पसंद चीज दी है, तो वह भी बदले में आप को कोई ऐसी चीज देना चाहेगा या कोई ऐसा काम करना चाहेगा, जो आप को पसंद आए ।

-आप किसी का उपकार करते हैं तो वह आमतौर इसका बदला चुकाने के लिए अवसर की तलाश में रहेगा ।

-आप किसी की प्रशंसा करते हैं तो वह आप को पसंद करेगा और प्रशंसा करने की कोशिश करेगा ।

-आप किसी का अपमान करते हैं तो उसके मन में बदला लेने की इच्छा जागृत हो जाती है ।

-आप कोई नकारात्मक काम करते हैं तो उसके बदले में बढ़ कर नकारात्मकता मिलती है ।

-अगर सकारात्मक काम करते हैं तो बदले में कोई ना कोई सकारात्मक चीज मिलती है ।

-जब आप इन आधारभूत पहलुओं को समझ जाएंगे तो आप में दूसरो को प्रभावित करने की अछ्चर्यजनक शक्ति आ जाएगी । यह जब मन की एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगों के कारण होता है ।

-आप योग्य है और आप को स्टेज पर नहीं आने दिया जाता तब आप अंदर ही अंदर आहत होते हैं और प्रबंधक से मन में टकराते हैं उसे कोसते हैं, दुखी होते हैं, तनाव आने लगता है ।

-इस दशा में आप मन में भाषण करो मन में देखो कि इस से डबल लोगो की सभा आप के सामने है और उन्हे मन में तरंगे देना आरम्भ कर दे । आप हर्ट नहीं होंगे ।

-अगर फिर भी डिसट्रब होते है तो उस शहर के सभी लोगो को तरंगे दो । फिर भी आहत होते है तो पूरे राज्य याँ देश को तरंगे देवे । जैसे जैसे मन में लोग बढ़ते जाएंगे आप को अच्छा अच्छा लगने लगेगा ।

-इसका कारण यह है कि जैसे दूसरो को तरंगे देते है तो हमारे दिमाग में स्थित एंटी टाइम तरंगे उन सभी लोगो से जुड़ जाती है जिन के बारे हम सोच रहे है । उनसे शक्ति मिलने लगती है और हमें मानसिक संतुष्टि मिल जाती है जाती है और हमारी भाषण करने की महत्व आकांशा पूरी हो जाती है ।

## आंतरिक बल 645

मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-एंटी टाइम तरंगे और महत्वपूर्ण बनने की भावना

- महत्वपूर्ण बनने की भावना का जन्म मन में होता है अर्थात आत्मा में होता है । यही कारण है कि महत्वपूर्ण बनने में स्व हित भी होता है ।

-मैं बॉस बनना चाहता हूँ, बड़ा जमींदार बनना चाहता हूँ, मैं प्रधानमंत्री बनना चाहता हूँ ये सब महत्व आकांक्षा है ।

-इन पदों की प्राप्ति के लिए बहाना होता है दूसरों की सेवा परन्तु गहरे में खुद को महत्वपूर्ण समझे जाने की भावना होती है ।

-हरेक व्यक्ति की कोई ना कोई महत्वकांक्षा होती है । यह अच्छी है । प्रत्येक व्यक्ति महत्व पूर्ण बन सकता है बस हमें मन की सूक्ष्म कार्य प्रणाली को समझना होगा ।

-हम जो भी महत्वपूर्ण लक्ष्य रखते हैं , उनके पीछे मन कैसे काम करता है, इसे जानना होगा ।

-हमारे मन में एंटी टाइम तरंगे होती है । हम भूतकाल, भविष्य काल के बारे सोचते है यही एंटी टाइम तरंगे है । वर्तमान में हम जो सोचते है एंटी टाइम तरंगे वही करने लगती है । इनके आगे समय और स्थान की दूरी नहीं होती । यह सोचते ही वहां पहुंच जाती है जिस काल के व्यक्ति वस्तु के बारे सोचते है और वही करने लगती हैं ।

-इन तरंगों से सही कार्य लेना सीखना हैं ।

-इस दुनिया में कुछ लोग हमारे से अच्छे है । जब हम उन से मिलते है तो मन में हीनता आती है । यह हीनता के विचार जब हम करते है तो एंटी टाइम तरंगे हीन चीजों को हमारे जीवन में लाती है । जिस से हम महत्वपूर्ण बनने में पिछड़ जाते है ।

-कुछ लोग हमारे से छोटे होते है कमजोर होते है उनसे जब बात करते हैं तो मन में उनसे हम अच्छा व्यवहार नहीं करते है याँ अपने को सुपर समझने



लगते हैं जिस से एंटी टाइम तरंगे हमारे में अहंकार लाती है । अहंकार आने से लोगो का दिल तोड़ देते है । जिस से हम महत्वपूर्ण बनने से पिछड़ जाते है ।

-आप गरीब हैं, अनपढ़ हैं, आप कमजोर हैं, आप के मां-बाप या भाई बहिनें कैसे भी हो, चाहे कुछ भी हो, आप अद्वितीय है । यह मन में पक्का बिठा लो ।

-जब आप किसी से भी मिलते है उस समय अपनी मनोदशा पर ध्यान रखे । अपना मनोबल उंचा रखे । तब आप को कोई नहीं रोक सकेगा आप बहुत महत्वपूर्ण बन जाएंगे ।

-जब आप आश्रम पर जाते है और भाई बहिनो से मिलते हैं, बात करते समय मन में यह भाव रखो कि मैं दीदी समान हूं । जैसे सभी लोग दीदी से प्यार से बात करते है । ऐसे ही सभी भाई बहिनें आप को दीदी की तरह सम्मान देगे, प्यार से बात करेगे । बस मुख से नहीं बोलना परन्तु मन में कहते रहो । आप की एंटी टाइम तरंगे दूसरो को अपने अनुकूल बना लेगी ।

-जब आप दीदी से बात करें तो उस समय अपने को दादी समझा करो । तब आप की एंटी टाइम तरंगे दीदी को आप से सम्मान पूर्वक बात करने को प्रेरित करेगी । कई छोटी लड़किया बहुत अक्लमंदी से बोलती हैं तो सभी उसे दादी दादी कहने लगते हैं । इसके पीछे लड़की की एंटी टाइम तरंगे दूसरो को ऐसा करने को उत्साहित करती हैं ।

-आप दादियो से बात करते है तो उस समय अपने आप को ब्रह्मा बाप समान समझो याँ जगदम्बा समान समझो तब आप की एंटी टाइम तरंगे इतनी शक्तिशाली होगी जो दादीयाँ भी आप को दिल से प्यार देगी ।

-ये सब करते हुए बाबा के बिंदु रूप को याद करते रहना हैं ।

-कई भाई और बहिनें कहती हैं हमें महत्व पूर्ण नहीं समझा जाता हैं । हमें सेवा कार्यो में आगे आने का चान्स नहीं मिलता । हमारे से छोटे छोटे कार्य लिए जाते हैं ।

- याद रखो जितनी सेवा करेगे उतना ही महत्वपूर्ण बनेगे । स्थूल सेवा में बहुत बंधन हैं, बहुत रुकावटें हैं । यह चान्स सब को नहीं मिलेगा । लोग विघ्न बन के सामने आ खड़े होंगे । यह मानव की पुरानी सोच हैं ।

-पुरानी सोच आसानी से नहीं बदलती । सोच तब बदलती हैं जब आप हर रोज 20 पेज अव्यक्त मुरली या कोई और अच्छी पुस्तक पढ़ते हैं । अगर आप या कोई भी, चाहे वह कितना भी महान हो अगर 20 पेज नहीं पढ़ता तो उसकी पुरानी सोच नहीं बदलेगी । सेवा बढ़ने पर पुरानी सोच अनुसार कार्य करेगा तथा दूसरो को आगे नहीं बढ़ने देगा ।

-इसलिए अगर आप महत्वपूर्ण बनना चाहते हैं तो 20 पेज जरूर पढ़ने हैं । जिस दिन आप नहीं पढ़ेगे तो समझो थोड़ा सा पतन हो गया हैं ।

-बाबा ने दीदी दादी वा सभी बी. के. के लिए मुरली सुनना जरूरी कर रखा हैं । इसके पीछे रहस्य यही हैं की पुरानी सोच बिना पढ़े नहीं बदलती ।

-आप को जो कोई भी दिक्कते आ रही हैं उसका कारण यही हैं कि पिछले काफी समय से पढ़ नहीं रहें हैं । इसलिए पढ़ना शुरू कर दो । आप कि मजबूरियां आप की समस्या हैं । भगवान तुम्हारे से पढ़ाई चाहता हैं ।

-दूसरा मन से सेवा किया करो । इस सेवा में कोई नियम कायदा नहीं हैं ।  
कोई रुकावट नहीं हैं । किसी से आज्ञा लेने की जरूरत नहीं । कोई हद नहीं  
हैं ।

## आंतरिक बल 646

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगे

- हमें यह सिखाया जाता है कि महत्वकांक्षी बनो, सफल हो, सबसे अच्छे  
अंकों से उत्तीर्ण हो, कक्षा में प्रथम आओ इत्यादि।

-अपना और अपने माँ बाप का नाम रोशन करना, प्रतिष्ठा कमाना और बाद  
में एक ज्यादा पैसे कमाने वाली नौकरी को पा लेने की अपनी योग्यता को  
विकसित करना ।

- दूसरों से आगे निकलना हमारे माता, पिता, अभिभावक, शिक्षक सभी हमें  
यही सिखाते हैं ।

- बच्चे और बड़े दोनों ही इस प्रतिस्पर्धा में शामिल हैं।

- जो जितना महत्वकांक्षी है उसमें उतनी ही इर्ष्या की संभावना है, घृणा की  
संभावना है और वह उतना ही हिंसक है।

-महत्वकांक्षी व्यक्ति अपने आस पास के लोगों से जब तक आगे रहता है उस की इर्ष्या, घृणा तथा हिंसा उसके अन्दर ही दबी रहती है पर जैसे ही उसके आस पास का कोई व्यक्ति उससे ऊपर उठने लगता है तो उसमें विरोध का भाव जाग उठता है।

-अब वह दूसरा व्यक्ति उसे सहयोगी की तरह नहीं दिखता वह उसे प्रतियोगी की तरह दिखने लगता है।

- इस चाह के चलते अब वह अपना पोषण करने के लिए दूसरे व्यक्ति का शोषण करने को भी तैयार हो जाता है।

-वह दूसरे व्यक्ति को नीचा दिखाने की कोशिश करता है, दूसरे व्यक्ति को अपने सफलता के मार्ग से हटाने की कोशिश करता है, दूसरे व्यक्ति का बुरा करने की कोशिश करता है, यहाँ तक कि दूसरे व्यक्ति को खत्म तक कर देने की कोशिश करता है ।

- अधिक महत्वकांक्षी व्यक्ति ही अधिक से अधिक लोगों का रोल मॉडल बना बैठा है। वही प्रतिष्ठा पा रहा है, उसका ही अनुसरण किया जा रहा है। वही दूसरे लोगों के लिए निर्णय लिए जाने के लिए प्रतिनिधि के रूप में चुना जा रहा है।

-हमारे आस पास के ज्यादातर लोग शोषण प्रवृत्ति के है ।

-यही कारण है कि अधिकतर लोगो से मिलते ही हमें हीनता होने लगती है, ईर्ष्या होने लगती है, मन ही मन दुखी होने लगते है । हमारी उन्नति में

विघ्न आने लगते हैं । हमें घुटन होने लगती है । हमें अपना पन नहीं लगता ।

- बस इस अहसास को बदलना है । अगर यह बदल दे तो हमारी मानसिक एंटी टाइम तरंगे हमारे को आगे बढ़ाने लगती है ।

-आप किसी बड़े व्यक्ति से मिलते हैं तो हम मन में सोचने लगते हैं मैं तो बस क्लर्क हूं, साधारण ग्रहणी हूं, मैं तो बहुत गरीब हूं । ये विचार आप कि एंटी टाइम तरंगो को कमजोर करते हैं ।

-मन लो आप डी. सी. से मिलते हैं तो मन में यह सोचा करो मैं कमीशनर हूं । अगर किसी टीचर से बात करते हैं तब सोचा करो मैं प्रिंसिपल हूं । किसी एम.एल .ए. से बात करते हैं तो सोचा करो मैं मंत्री हूं । मुख्य मंत्री से बात करते हैं तो यह सोचा करो मैं प्रधान मंत्री हूं । किसी सिपाही से बात करते हैं तो सोचा करो मैं थानेदार हूं ।

-ऐसे कोई भी बड़ा और शक्तिशाली व्यक्ति जो सामने आए या घर में हो या पड़ोस में हो दफ्तर में हो, तुरंत मन में अपने को उस से बड़ा समझा करो । आप के इस प्रकार से सोचने पर आप के मन की एंटी टाइम तरंगे आप में ऐसा बल भर देगी जो सामने वाला आप को डिस्टर्ब नहीं कर पाएगा । बस यह मन में करना है लोगो को नहीं बताना क्योकि वह आप का साधारण रूप देख कर आप का मजाक उड़ाएंगे और आप का मनोबल तोड़ देगे ।

-आप किसी नौकरी वाली बहिन या भाई को देखते और आप को ईर्ष्या होती है क्योंकि आप को नौकरी नहीं मिली । ऐसी अवस्था में सोचा करो मैं इस से भी बड़ी नौकरी प्राप्त करूंगी । आप को सिर्फ नौकरी से संबंधित पुस्तके पढ़नी हैं । अगर आप अनपढ़ है तब सोचा करो मैं पढ़ूंगी और इस से उच्च नौकरी प्राप्त करूंगी अगर इस जन्म नहीं मिली तो अगले जन्म श्रेष्ठ पद प्राप्त करूंगी ।

-आप के ये भाव आप की मानसिक एंटी टाइम रेडियो तरंगों के द्वारा आप के लिए वैसी ही परिस्थितयां बना देगी । तथा आप किसी से प्राभावित नहीं होगे ।

## आंतरिक बल 647

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

- एंटी टाइम ट्रेवल तरंगों और मनचाहे लक्ष्य कैसे प्राप्त करें ।

-आप का कोई ना कोई लक्ष्य था । हम किन्ही कारणों से पूरा नहीं कर सके ।

-कारण यह कि हमें अपनो ने या दूसरे लोगो से जिन पर विश्वास किया था उन्होने धोखा दिया । आप की जायदाद लूट लें गए, आगे बढ़ने में सहयोग नहीं किया, आप का शोषण किया । नाजुक पलों में मुह फेर गये। आप मनचाहे लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाए ।

-प्राय ऐसे विचार समान्य व्यक्ति के मन में चलते रहते हैं ।

-ये विचार करते रहने से मन की एंटी टाइम तरंगे वही वही आप को अनुभव कराती रहेगी । आप बुरे अनुभवों से बाहर नहीं आएंगे, मन में तनाव बना रहेगा और आगे नहीं बढ़ पाएंगे । हर पल रोना आता रहेगा । h

-मनचाहे लक्ष्य पाने के लिए सिर्फ यह याद रखो कि पुरानी भूलों से क्या सीख मिली ।

-आप जो बनना चाहते थे, करना चाहते थे, वह अपने बच्चों को बना दो आप का लक्ष्य पूरा हो जाएगा । किसी भी उपलब्धि के पीछे कई पीढ़ियों का हाथ होता है ।

-जिन कारणों से आप लक्ष्य नहीं पा सके वह दिकते अपने बच्चों को मत आने दो ।

-आप का किसी ने शोषण किया या पैसा लूट गया उसकी चिंता ना करें । प्रकृति हरेक चीज का हिसाब किताब रखती है ।

- जिन लोगों ने आप के धन को लूटा है वह सारा धन अगले जन्म में उनको को ब्याज सहित लौटाना पड़ेगा । इसलिए चिंता क्यों करते हो । प्रकृति एक एक पाई लौटाएगी । भगवान के घर देर है अंधेर नहीं ।

-आप अपने लक्ष्य को अब भी प्राप्त कर सकते हैं ।

-आप डॉक्टर्स बनना चाहते हैं तो डॉक्टर्स कोर्स की बूक्स खरीद लो । हर रोज कुछ पेज पढ़ते रहो । अगर समझ नहीं आता तब भी एक एक पेज को

ध्यान से देखा करो । यह ज्ञान बहुत गहरे तल पर आपके दिमाग में चला जाएगा जीवन पर्यन्त आप ऐसा करते रहें । अब तो शायद आप डॉक्टर नहीं बन पाएंगे क्योंकि ऐज फेक्टर होता है । परन्तु यह पक्का है कि आप अगले जन्म डॉक्टर जरूर बनेंगे ।

-आप आई ए एस बनना चाहते थे । अब आई ए एस की बुक्स हर रोज पढ़ते रहो । ये सारा ज्ञान आत्मा में चला जाएगा और आप अगले जन्म छोटी उम्र में ही आई ए एस बन जाएंगे ।

- आप जो बनना चाहते थे मन में अब भी अपने को वही समझते रहो । मैं इंजिनियर हूं, मैं विज्ञानिक हूं, मैं राजा हूं, मैं धनवान हूं । ऐसी स्मृति रखने से आप कि मनोदशा बहुत ऊंची रहेगी और वैसी ही परिस्थितिया बनती जाएगी जैसे ही लोग जीवन में आते जाएंगे ।

-लक्ष्य प्राप्त ना होने ना होने का कारण, धोखा खाने का कारण क्या था उसकी गहराई में जाने पर आप पाएंगे कि आप को समझ नहीं थी, ज्ञान नहीं था ।

-सफलता का आधार ज्ञान है । इसलिए अपने दिमाग पर खर्च करो । लक्ष्य से संबंधित पुस्तके पढ़ा करो । ट्यूशन रखा करो । प्रोग्राम तथा सत्संगों में, साधना शिविर में भाग लिया करो । यह आप की इन्वेस्टमेंट है जो हर जन्म में काम आती है ।

- आप में जो भी कला है उसके द्वारा विश्व की सेवा किया करो ।



- अगर आप पाक कला में निपुण हैं तो आप अपनी गली की लड़कियों और महिलाओं को सिखाओ । इसके लिए उन्हें कल्पना में अपने घर बुलाओ और उन्हें कल्पना में ही सिखाओ । ऐसे हर रोज करते रहो ।

-अगर आप ज्ञान में अच्छे हैं तो उन्हें बाबा का ज्ञान और योग सिखाते रहो

-आप डॉक्टर हैं तो दूसरे भाइयों को कल्पना में यह सिखाते रहो ।

-आप की एंटी टाइम मानसिक तरंगे सचमुच में उन सब बहिनो और भाइयों के दिमाग को प्रशिक्षित कर रही हैं और वह महान बन जाएंगे ।

-इसी विधि से अपने मुहल्ले, शहर, राज्य, देश और विश्व की आत्माओं को सामने देखते हुए उन्हें अपनी कला सिखा दो । सारा संसार आप जैसा बनने लगेगा और अच्छे व्यक्ति आप के जीवन में आने लगेगे और बुलंदियां छूने लगेगे ।

-यह सब ईश्वर के माध्यम से सचमुच होने लगता है ।

-हम जो भी चाहते हैं मन द्वारा वह सब करते रहो ।

-यह संकल्प ही कर्म है । कर्म मनुष्य को महान बना देता है तथा आप के मनचाहे लक्ष्य पूरे होते हैं ।

## आंतरिक बल 648

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं

-एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगे और मनचाहे लक्ष्य

-हमें अपनी जिंदगी के जो हिस्से अच्छे नहीं लगते उसके लिए हम अपने बाहर के किसी कारण को जुम्मेवार ठहराते हैं ।

-हम अपने माता पिता, अपने अफसरों, अपने दोस्तो, मीडिया, अपने साथ काम करने वालो, अपने ग्राहको, अपने जीवन साथियो, अपने दोस्तो, अपने ग्राहको, मौसम के उतार चढ़ाव, अर्थ व्यवस्था, अपनी कुण्डली, अपने पैसो के अभाव को जुम्मेवार ठहराते हैं ।

-ऐसा सोचने से हमारे मन से निकली एंटी टाइम तरंगे दूसरो की कमियो पर एकाग्र हो जाती हैं और हम उन लोगो से टकराते रहते हैं जिस से मानसिक शक्ति नष्ट होती रहती हैं और हम धीरे धीरे शरीरिक और मानसिक रोगी बनने लगते हैं ।

-सबसे बड़ी कामयाबी हासिल करने के लिए आप को अपनी जिंदगी की खुद जुम्मेवारी लेनी होगी ।

-तुम ने वह सब खुद रचा हैं जो तुम्हारे साथ हो रहा हैं । यही सच्य हैं ।

-अगर तुम सचमुच सफल होना चाहते हैं तो तुम्हे दूसरो को दोषी ठहराना और शिकायत करना छोड़ना ही होगा । तथा अपनी जिंदगी के लिए पूरी जुम्मेवारी उठानी होगी ।

-दूसरो पर दोष मढ़ने की आदत को सदाकाल के लिए छोड़ना होगा ।

-हम ऐसे विचारो मेंं डूबे रहते हैं जो हमारे चारो तरफ सीमाए खड़ी कर देते हैं ।

-यह इसलिए होता हैं क्योकि हम लगातार खुद को शिक्षित करने मेंं विफल रहते हैं, नए कौशल सीखमने मेंं कोताही बरतते हैं, फालतू की गपछप मेंं जुटे रहते हैं । अस्वस्थ्यकर चीजे खाते हैं, कसरत करने मेंं गुरेज करते हैं, आमदनी से ज्यादा खर्च करते हैं, भविष्य के लिए निवेश नहीं करते, जरूरी संघर्ष से कतराते हैं । सच्य बोलने से कन्नी काटते हैं । जो हम चाहते हैं उसकी फरमाइश नहीं करते फिर हम अचरज से भर उठते हैं कि आखिर हमारी जिंदगी बेहतर क्यो नहीं , इतनी गड़बड़ क्यो हैं ।

- अगर आप इन पहलुओ पर कार्य करते हैं तो एंटी टाइम तरंगे निर्माण कार्य में लग जाती हैं और हमारी उन्नति आरम्भ हो जाती हैं ।

- ज्यादातर लोग ऐसा नहीं करते हैं, हर वह चीज जो उनके माफिक नहीं है उसका दोष बाहरी घटनाओ और कारणो पर डाल देते हैं ।

-बद क्रिस्मती से अधिकांश लोग अपनी आदतों के इस तरह गुलाम होते हैं कि हम कभी अपना व्यवहार नहीं बदलते ।

-हम पहले से तय शुदा प्रतिक्रियाओ मेंं - अपने जीवन साथी और मित्रो के प्रति, अपने सहकृमियों के प्रति, अपने ग्राहको के प्रति, अपने चाहने वालो

के प्रति और असमान्य रूप से सारी दुनिया के प्रति फंसे रह जाते हैं । हमारी मानसिक तरंगे इसी चक्रव्यूह में अटकी रहती है ।

-हम तयशुदा प्रतिक्रियाओ का समूह हैं जो हमारे नियंत्रण से परे सक्रिय रहती हैं ।

-हमें अपने विचारो, अपनी छवियों, अपने सपनो और दिवा सपनो पर दुबारा काबू पाना होगा ।

-जो भी आप सोचते, कहते और करते हैं, वह आप के उदेश्य आपके मूल्यों और लक्ष्यों से उसका तालमेल बैठाना चाहिये ।

-अगर आप को अपने परिणाम पसंद नहीं तो अपनी प्रतिक्रियाएं बदलनी होगी ।

-जो विरोधी व्यक्ति मन में आते है उनके प्रति मन में प्रतिक्रिया बदलो । अब तक हम मन में उनको बुरा भला कहते थे । आज से तुरंत उन्हे कहो आप शांत हो आप का कल्याण हो या और कोई साकारात्मक प्रतिक्रिया किया करो । इस से एंटी टाइम मानसिक तरंगो की शक्ति बढ़ेगी और आप के लिए निर्माण के रास्ते खुलते जाएंगे ।

-विश्व की आत्माओ को सदा अपने सामने देखते हुए उन्हे कहते रहो आप सभी शांत स्वरूप है प्रेम स्वरूप है । आप को अपार शांति और प्रेम महसूस होने लगेगा ।

## आंतरिक बल 649

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं

- एंटी टाइम ट्रेवल तरंगे और मनचाहे लक्ष्य

क्या आप ने कभी गुरुत्वाकर्षण बल के बारे किसी को शिकायत करते सुना है।

-कोई भी गुरुत्वाकर्षण के बारे कुछ नहीं कर सकता । हम उसे स्वीकार कर लेते हैं और इस शक्ति से लाभ कैसे लें सकते हैं सिर्फ इस पहलू पर सोचते रहते हैं ।

-भूत काल के बारे हम कुछ नहीं कर सकते । हम सिर्फ इतना कर सकते हैं कि इस से सीख क्या ली । अगर इस की नकारात्मक घटनाए याद रखेगे तो धरती की चुम्बकीय शक्ति की तरह यह हमें तोड़ कर रखा देगा क्योकि मन की एंटी टाइम तरंगे हमें बूरे अनुभवो से बाहर नहीं निकलने देगी

-पहली सीख यह है कि जिन व्यक्तियों और परिस्थितियों के बारे हम शिकायत करते रहते हैं उन्हे हटा नहीं सकते परन्तु उनके बारे अपनी प्रतिक्रिया को बदल सकते हैं ।

-दूसरी सीख यह है कि आप अपनी सोच को सकारत्मक कार्य में लगा दे ।

-बेहतर नौकरी की खोज कर सकते हैं । अपने सपने को साकार करने के लिए समय निकाल सकते हैं । फिर से पढ़ाई शुरू कर सकते हैं । आत्म विकास का कोई प्रशिक्षण लें सकते हैं । अधिक पैसे कमा सकते हैं । दबाव आने पर

ना कह सकते हैं । किसी दूसरे मोहल्ले में जा कर रह सकते हैं । यह सब साकारात्मक कार्य हैं ।

-लोग हमेशा गलत लोगो से शिकायत करते हैं । उन लोगो को शिकायत करते है जो कुछ नहीं कर सकते ।

-आप के नल में पानी नहीं आ रहा है परन्तु आप शिकायत बिजली बोर्ड को करते हैं । वह इस मामले में कुछ नहीं कर सकता ।

-आप अपने बाँस से परेशान हैं और शिकायत पत्नी को करते हैं । वह इस मामले में कुछ नहीं कर सकती ।

-आप की तबियत खराब हैं और इलाज दर्जी से पूछते हैं । वह कुछ मदद नहीं कर सकता ।

-आप को जो भी परेशानिया आ रही हैं, उन सब का इलाज हमारे पूर्वजो ने पुस्तको में लिख रखा हैं । इसलिए अपनी समस्या से संबंधित पुस्तके पढ़ो । इधर उधर शिकायते करने की जरूरत नहीं हैं ।

-कोई भी समस्या का हल बताने वाले अनेको लोग मिलेगे । आप ने वह शिक्षा फालो करनी हैं जिस में कल्याण और निर्माण समाया हो ।

-आप को कोई भी समस्या आ रही हैं उस से बचने के लिए किसी ना किसी व्यक्ति या किसी प्राणी या प्राकृति के किसी तत्व को प्यार देते रहो । आप का मन कल्याण में लगा रहे । जैसे कि -

-चाहे कितनी भी आंधी आए तूफान आए कम्पास की सुई सदा ही उतर दिशा की ओर रहती है ।

-चाहे कैसी भी परिस्थितयो हो सदा मन परमात्मा में लगाए रखने से सब तूफानो से पार हो जाएंगे । अगर भगवान याद ना आए तो अव्यक्त मुरली या कोई अन्य साकारात्मक बुक पढ़ते रहें तो सभी मानसिक तूफान, विकारों की अंधिया , सब खत्म हो जाती है और अपनी मंजिल पर पहुंच जाते है ।

-आप को ऐसे लोग मिलेगे जो तर्क और दलीले दे कर आप को अपने लक्ष्य से अलग करने, उसे छोड़ने का फैसला करने के लिए उकसायेगे, मनाने की कोशिश करेगे ।

-वे आप से कहेगे कि आप पागल हैं और जिस काम का इरादा आप ने किया हैं वह पूरा नहीं किया जा सकता ।

-ऐसे भी होंगे जो आप पर हंसेंगे और आप को नीचे अपने स्तर तक घसीटने की कोशिश करेगे ।

-ये दलीले बर्फीले तूफान की तरह होती है ।

-ऐसे लोगो की बाते मत सुनो ।

-आप अपना मन पढ़ने में लगाए और मानसिक सेवा करते रहो तो इन आत्माओ के चंगुल से बच सकेगे ।

## आंतरिक बल 650

-मन एक रेडियो स्टेशन हैं

-एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगे और भविष्य के मनचाहे लक्ष्य

-आप जो चाहे बन सकते हैं, जो चाहो प्राप्त कर सकते हो, क्योंकि दिमाग जो कुछ सोच सकता है उसे हसिल कर सकता है ।

-दिमाग एक शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर हैं जिस के द्वारा सोची गई प्रत्येक चीज प्राप्त की जा सकती हैं सिर्फ विश्वास हो कि यह हो सकता हैं ।

-मैं नहीं कर सकता जैसे वाक्य और उसके भाई बंधुओ, काश मैं करने लायक होता या काश मैं कर सकता, को त्यागना होगा । यह शब्द, मैं नहीं कर सकता, दरसल आपको शक्तिहीन बना देते हैं ।

- दिमाग की बनावट ही ऐसी है कि जो भी समस्या उसके सामने रखें उसे वह हल कर सकता है और आप के दिए गये लक्ष्य को पा सकता हैं ।

-आप जो चीज चाहते है उसके बारे सिर्फ सोचो । सोचना ही कर्म हैं ।

-आप सोचो मुझे चाय पीनी है तो आप चाय बना लेगे या किसी होटल पर चले जाएंगे या किसी मित्र के घर चले जाएंगे और चाय पिएंगे ।

-आप सोचो मुझे एक साड़ी लेनी है । दिन में दो-तीन दिन सोचते रहो । आप सोचेंगे कौन सी कम्पनी तथा किस रंग की खरीदूंगी । फिर नकद खरीदूंगी



या उधार खरीदूंगी । अगर नकद खरीदनी है तो पैसे का प्रबंध करेगे । तथा एक दिन समय निकाल कर बजार जायेगे और साड़ी खरीद लाएगी ।

-आप को चंडीगढ़ जाना है, जाना है, यह सोचो और एक दिन चंडीगढ़ के लिए चल पड़ेगे ।

-आप सोचते है मुझे 8 बजे ऑफिस के लिए निकलना है । 8 बजते ही हम अपने आप चल पढ़ते है ।

-हम कोई भी काम करते है उसके पहले सोचते हैं ।

-जब हम कुछ करने के लिए सोचते हैं तो हमारे मन की एंटी टाइम तरंगे वह सब करने लग जाती हैं और तब तक लगी रहती हैं जब तक वह सचमुच में हमारे जीवन में न आ जाए ।

- ऐसे ही आप जीवन में जो भी करना चाहते है । जो प्राप्ति चाहते है । उसकी लिस्ट बना लो ।

-मान लो आप एक मकान चाहते है । एक कार चाहते है । आप टीचर बनना चाहते है । आप चाहते है कि आप को 50000 हजार रुपये हर मास मिलता रहे । आप लेखक बनना चाहते हैं । आप का जीवन साथी समझदार हो, मिलनसार हो, केयर करने वाला हो । इसके इलावा भी जीवन जो कुछ चाहते है । उन चीजों की लिस्ट बना लो ।

-मनचाही प्राप्तियों की लिस्ट बनाते ही आप की एंटी टाइम मानसिक तरंगे कार्य करने लगती हैं ।

-एक दिन में कम से कम तीन बार इस लिस्ट को रिवाइज़ करते रहो । उस पर सोचते रहो कि इन्हे कैसे प्राप्त कर सकते है ।

-यह सब किसी से डिसकस करने से बचना है, नहीं तो आप के सब से नजदीकी लोग आप की पत्नी, आप का मित्र आप का विरोध करेगा यह कैसे हो सकता है और मन ही मन आप की मानसिक तरंगो को काटेंगे ।

- आप अपनी इच्छाओं के बारे सोचते रहे, उसके लिए पुस्तके पढ़ते रहे और संबंधित लोगो से मिलते रहे, आप को विचार आएंगे कि किस लक्ष्य के लिए क्या करना है । वह आवश्यक कार्य भी करो ।

-धीरे धीरे आप की सभी इच्छाएं पूर्ण होने लगेगी ।

-यह सब करते हुए बिंदु रूप परमात्मा या इष्ट को याद भी करना है ।

## आंतरिक बल 651

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-मन की एंटी टाइम ट्रेवल तरंगो और भविष्य के मनचाहे लक्ष्य

-प्रत्येक व्यक्ति भूतकाल की बाते व घटनाए जानता है । उसे याद करता रहता है और दुखी होता रहता है । इसका कारण यह है कि मन सच में भूतकाल में चला जाता है और वह महसूस करता रहता है जो भूतकाल में हो चुका है ।

-अगर हम भविष्य के बारे सोचते हैं तो हमारी एंटी टाइम मानसिक तरंगे भविष्य में चली जाती हैं और हमारी सोच अनुसार कार्य करने लगती हैं ।

-आप सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनना चाहते हैं । आप देवता बनना चाहते हैं । आप दयालु बनना चाहते । आप राजा या महाराजा बनना चाहते । आप निरोगी बनना चाहते हैं ।

-आप वर्तमान में जो हैं वह नहीं सोचो । आप वह सोचो जो भविष्य में बनना चाहते हैं ।

-आप का साथी शराब पीता है । आप सोचा करो यह शराब नहीं पिएगा । वह सच में नशा छोड़ जाएगा । बाबा को याद करते हुए सोचते रहो । आपकी मानसिक तरंगे उसे ठीक करने में लग जायेगी और 2-3 साल में बुरी लत छोड़ जाएगा ।

-मैं सम्पूर्ण बनूंगा । मैं राजा बनूंगा । राजा का दरबार कैसा होगा । न्याय व्यवस्था कैसी होगी । धन कैसे मिलेगा आदि आदि विषयो पर सोचते रहो । आप में राजाओ वाले गुण आने लगेगे ।

-हम प्राय अपनी पुरानी जीवन कहानी लिख कर बाबा के आगे रखते हैं और माफी मांगते रहते हैं । इसकी बजाय यह लिखा करो बाबा मैं सब से प्यार से रहूँगा । बाबा मैं ऐसे कार्य करूंगा जिस से परिवार का, समाज का, देश का और स्वयं मेरा कल्याण होगा । बाबा मैं श्रेष्ठ कार्य करूंगा । इस से आप का मनोबल बढ़ेगा और आप महान बनने लगेगे ।

-अगर आप धनवान बनना चाहते हैं तो मन में किसी धनवान व्यक्ति की फोटो देखते रहो सोचते रहो कि मैं उस जैसा धनवान बनूंगा । आपकी मानसिक तरंगे धनी व्यक्तियों से टकराएगी और उन जैसी कला आप में विकसित हो जाएगी ।

-आप सोचते रहा करो कि मैं भविष्य के राजाओ जैसा धनवान बनूंगा ।

-आप धन के लिए जिस पर निर्भर हैं उन्हें प्यार की तरंगे दिया करो । बाबा को याद करते हुए मन में सोचा करो आप का पति, बेटा या पिता जी, आप के धन के स्रोत, बड़े ध्यान से कार्य करते हैं बहुत मधुरता से सब के साथ व्यवहार करते हैं । ग्राहको की लंबी लाइने लगी रहती हैं ।

-इसके सथ सथ अपनी योग्यता बढ़ाए । उंच से उंच डिग्री प्राप्त करो । धन के ऊपर बहुत सी पुस्तके छपी हुई हैं जिनमे धन के बारे बहुत सूक्ष्म बातें लिखी हुई हैं उनके पढ़ने से आप की बुद्धि तीव्र हो जायेगी ।

-आप की मानसिक तरंगे व्यक्तियों को प्रभावित करेगी और आप के लिए धन की बौछार होने लगेगी ।

-ईश्वर, प्रकृति या आकाश के पास आपको देने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन यदि आपके पास किसी वस्तु को पाने की तीव्र चाहत नहीं है तो वह नहीं मिलेगी। आपकी चाहत में ताकत होनी चाहिए।

- चाहत और कुछ नहीं शक्तिशाली मानसिक तरंग हैं जो मनचाही लक्ष्यों को आप के अनुकूल बनाती है ।

## आंतरिक बल 652

-मन एक रेडियो स्टेशन है ।

-मन की एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगे और व्यापार में सफलता

-सभी भाई बहिनें एक ही बात पूछते है कि व्यापार में सफलता कैसे पाए ।  
व्यापार में बरकत कैसे आए ।

-व्यापार में असफलता या मंदी के अनेको कारण बताए जाते है ।

-व्यापार की मंदी का मूल कारण क्रोध है ।

-जब हम क्रोध करते है या मन में रखते है और क्रोध के समय करीलियन कैमरे से अगर फोटो लिया जा सके तो हमारे दिमाग में से आग के गोले निकलते हुए दिखाई देगे ।

-अगर कोई व्यक्ति हमारी दुकान पर आए और हम उस पर आग के अंगारे फेंके तो वह व्यक्ति दूर भागेगा ।

-आज प्रत्येक व्यापारी किसी ना किसी कारण से मन में क्रोधित रहता है ।  
बेशक वह बोलता तो मीठा है परन्तु मन से अंगारे जैसी तरंगे निकलती रहती है जिस से ग्राहक दूर से ही भाग जाते है । .

-व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए क्रोध से अपने को बचाना चाहिए ।

-क्रोध मनुष्य के विवेक का अपहरण कर लेता है । क्रोध मनुष्य को भ्रम में डाल देता है ।

-क्रोध के वशीभूत हो कर मनुष्य बना बनाया खेल बिगाड़ लेता है । तब उसे दुखपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है ।

-यह क्रोध धीरे धीरे मनुष्य के स्वभाव में बस जाता है और उसको कदम कदम पर हानि पहुंचाता है ।

-ऐसा व्यक्ति क्रोध में हर समय भरा रहता है और हानि को जैसे मोल लें लेता है । इसलिए क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिये ।

-व्यापार में क्रोध का कोई काम नहीं - यह विचार मन में रख कर काम करना चाहिये ।

-अगर पति पत्नी का आपस में प्यार नहीं है, घर के दूसरे सदस्यों से लड़ाई झगड़ा रहता है, तो यह क्रोध का कारण बन जाएगा । आप हर समय इन लोगों से मन में नाराज रहेंगे तो यह क्रोध आप के ग्राहक भी महसूस करेंगे और आप के व्यापार में बरकत नहीं पड़ेगी ।

-व्यापार में लोग टोने टोटके का प्रयोग करते हैं । इस से उन पर डबल मार पड़ती है । एक तो व्यापार में घाटा चल रहा होता है दूसरा टोने टोटके में भी भारी खर्च हो जाता है ।

-इसलिए अपने जीवन में प्यार को लें आओ ।

-किसी ना किसी स्नेही व्यक्ति को मन से निष्काम स्नेह देते रहा करो । परमात्मा के बिंदु रूप या इष्ट को याद करते रहना चाहिये और मन में यह संकल्प कि भगवान आप प्यार के सागर हैं रिपीट करते रहना चाहिये ।

-भगवान को याद करते हुए मन में देखे कि आप की दुकान पर ग्राहको की लंबी लाइने लगी है । आप मन में संकल्प रेपीट करें भगवान आप प्यार के सागर है । ऐसा करने से आप के मन से निकली एंटी टाइम तरंगे खुशबूदार फूलो का रूप धारण कर लेगी और सब ग्राहको को आप की दुकान पर आकर्षित करेगे और आप के व्यापार में बरकत पड़ेगी ।

-बहिनें जिस व्यक्ति पर निर्भर है, पापा, भाई, पति या बेटा । जब वह काम पर जाता है उस समय उसे मन ही मन देखते रहे और भगवान को याद करते हुए कहते रहे भगवान आप प्यार के सागर है प्यार के सागर है । आप के यह संकल्प उस व्यक्ति के लिए सुरक्षा चक्र बन जाएगे उसे क्रोध नहीं आएगा, वह खुश रहेगा, जो भी ग्राहक दुकान पर आएगा, समान खरीदेगा । इस तरह आप का व्यापार बहुत अच्छा चलेगा ।

-यह अभ्यास जब तक हम जीते है करते रहना है ।

-

## आंतरिक बल 653

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम ट्रेवल तरंगे और व्यापार में सफलता

-व्यापार में सफलता उन लोगों ने पाई जिन्होंने व्यापार से संबंधित फैसले तब लिए जब उन का मन बहुत शांत था ।

-किसी दबाव , तनाव या विरोध के समय कोई निर्णय ना लो ।

-जब आप बहुत शांत हो उस समय सोचा करो व्यापार को बढ़ाने लिए क्या किया जाए ।

-जब भी निर्णय लेना हो कोई मन पसंद पुस्तक पढ़ना शुरू कर दो । जब आप को पुस्तक पढ़ते समय आनंद आने लगे । उस समय पढ़ते पढ़ते साथ में व्यापार से संबंधित सुझाव आने लगेंगे । वह सुझाव लिखते रहो और उन में जो विचार बहुत जंचता हो उसी अनुसार कार्य करो । आप को सफलता मिलेगी ।

-कोई भी समस्या हो उस के ऊपर सोचते रहो कि इस कार्य को और सहज ढंग से कौसे करू । आप को अचानक से अच्छे अच्छे आइडियाज आएंगे

-ये सब मन की एंटी टाइम ट्रेवल तरंगों के कारण से होता है ।

-व्यापारी प्राय दूसरे व्यापारी से ईर्ष्या करता रहता है । इस से मन से ऐसे विचार निकलते हैं जिन की दुर्गन्ध जलती हुई मिर्च जैसे होती है । इस दुर्गन्ध के कारण से लोग आप से माला नहीं खरीदते । वह आप से दूर भागते हैं ।

-ऐसे ही घर में भी किसी से ईर्ष्या या घृणा नहीं करनी है । अगर करेंगे तो व्यापार में बरकत नहीं पड़ेगी। कई बार व्यापारी ईर्ष्या से दूसरे व्यापारी को दबा देते हैं और खुद बढ़ जाते हैं । इस विधि से बढ़ने वाले व्यापारी मानसिक रूप से परेशान रहते हैं ।

-जब भी मन में ईर्ष्या आये तुरंत उस व्यक्ति को देखो जिस से आप को प्यार हो और भगवान को याद किया करो ।



-कहा जाता है वह लोग आगे बढ़ते हैं जिन पर भगवान या सरकार की दया दृष्टि हो ।

-इस लिए सरकार को हर समय कोसते नहीं रहो । सरकार की नीतियों अनुसार अपने को ढाल लो

-आज प्रायः लोग कहते हैं नौकरी नहीं मिलती । सब जगह रिश्वत चलती है । सिफारिश चलती है ।

- नौकरी का आवेदन करते समय अगर आप सरकार की और नौकरी का चयन करने वाले लोगों के प्रति मन में नफरत रखेंगे तो आप के यह विचार आप के आवेदन में चिपक जाते हैं और जब यह संबंधित व्यक्तियों के सामने आता है तो उनके मन की एंटी टाइम तरंगे पकड़ लेते हैं और आप का आवेदन रद्द कर देते हैं ।

-अगर आप किसी नौकरी की परीक्षा की तैयारी करते समय एग्जामीनर को स्नेह की तरंगे देते रहे तो आप को वही पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी जहां से उसने पेपर सेट किया है । इस तरह आप रिटन परीक्षा पास कर जाएंगे और और आपको नौकरी मिल जाएगी ।

-आप को बिजनेस में जो भी परेशानियां हैं उस से संबंधित पुस्तक पढ़ा करो । पढ़ने से इसे आगे बढ़ाने की युक्तियां मिल जाएंगे ।

-सार में, यदि जीवन में कोई भी दिक्कत हो, तन की, मन की, संबंध की, धन की तो तुरंत पुस्तक पढ़ा करो । आप जीवन में सदा आगे बढ़ते रहेंगे ।

## आंतरिक बल 654

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-एंटी टाइम ट्रेवेल तरंगे और व्यापार में सफलता

-रेडियो से निकली तरंगे एक क्षेत्र तक अपना प्रभाव दिखाती है । उस क्षेत्र में रहने वाले लोग रेडियो प्रसारण का लाभ लें सकते है ।

-मन रूपी रेडियो से निकली तरंगे पूरे ब्रहमांड में प्रसारित होती रहती है ।

-उस रेडियो में तो हमारी मर्जी होती है कि हम उसे सुने चाहे ना सुने ।

-मन रूपी रेडियो से निकली तरंगे हमें सुननी ही पड़ती है ।

-जिन लोगो के हम पूर्वज है उन सब तक ये तरंगे पहुचती रहती है । इसके साथ साथ हमारे शरीर को प्राभावित करती रहती है । हमारे साथ रहने वालो और जहां हम कार्य करते है वहां उपस्थित लोगो को और जिनसे व्यापार करते है, उन्हे भी प्राभावित करती है ।

-कोयल जब बोलती है तो आसपास के वातवरण को मदहोश बना देती है ।

-जंगल में शेर जिन जानवरो का शिकार करता है उन का रुदन सारे जंगल के जीवो को दुखी करता है ।

-प्रत्येक मनुष्य जब भगवान को याद करता है तो मनुष्य के मन से निकली तरंगे पूरे ब्रहमांड को आनंदित कर देती है ।

-जब मनुष्य दूसरे मनुष्य को दबाता है तो उस से निकली तरंगे पदार्थों तक को नुकसान कर देती है ।

- एक बहु को घर के सभी सदस्य हर समय दबा कर रखते थे । उसे अच्छे कपड़े नहीं देते थे । ढंग का भोजन नहीं देते थे ।

-उस घर में जो भी नए कपड़े सिल कर आते थे और उन्हे अगर सुरक्षित अलमारी में रख देते थे तो वह 6 महीने बाद जब निकालते थे तो उन कपड़ो मे छेद ही छेद होते थे ।

-वह बहु मन में सोचती रहती थी कि उन के कपड़ो में छेद हो जाए और सचमुच में तरंगे कपड़ो में छेद कर देती थी । इस लिए अगर व्यापार में आगे बढ़ना चाहते है तो घर में रहने वाली महिलायों और बच्चों को कभी ताना नहीं मारना, कभी लताड़ना नहीं । उन्हे प्रेम से समझाना है । माफ कर देना है । नहीं तो उन की बद दुआए बरकत नहीं पढ़ने देती ॥

-जब मनुष्य के मन से बद दुआए निकलती है तो वह तरंगे वेल्डिंग गैस जैसी तेज होती है । वेल्डिंग तरंगे लोहे तक को छेद कर देती है ।

-किसी के प्रति निकली बद दुआ सामने वाले को आंतरिक रूप से बहुत नुकसान करती है । बड़े बड़े राजनेता और धर्मिक नेता और व्यापारी भयंकर रोगो से पीड़ित रहते है उस के पीछे गरीब लोगो की आहें होती है ।

-सदा ध्यान रखो आप के बोलो से कोई आहत तो नहीं होता ।

-कई लोग बिना कारण डरते रहते हैं। जिन घरों में, संस्थाओं और दफ्तरों में लोगों को बोलने नहीं दिया जाता और अगर कोई बोलता है तो उसे कुचल दिया जाता है। ऐसे स्थानों पर रहने वाले लोगों को डर लगता है कि पता नहीं बड़े उनके साथ क्या कर देंगे।

- ऐसा महौल मनुष्य को परेशान करता है।

-अगर आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं तो किसी को कुचलने का मत सोचो।

-अपने ग्राहकों की लिस्ट बना लो और सुबह जब भगवान को याद करते हैं तो उस समय सभी ग्राहकों को कल्पना में देखो और भगवान के साथ साथ उनकी भी आरती उतरा करो। वे सभी आप के परमानेंट ग्राहक बनेंगे।

## आंतरिक बल 655

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-मन की एंटी टाइम ट्रेवल तरंगें और व्यापार में सफलता

-आप जिसे भी जीवन में लाना चाहते हैं तो आप उससे प्रेम करते हैं। अगर आप बिजनेस में सफलता चाहते हैं तो अपने ग्राहकों को प्रेम किया करो। जो भी आप की दुकान पर आए जैसे ही आप की दुकान पर आए आप मन में उसे कहा करो आई लव यू लाईक यू।

-वह व्यक्ति जब तक आप की दुकान पर है उसे मन में यही कहते रहा करो ।  
जब वह दुकान से बाहर जाए तब भी यही शब्द कहते रहा करो ।

-सुबह जब आप भगवान को याद करते है तो जो लोग आप की दुकान पर आए थे, जिन्होंने समान खरीदा था या नहीं खरीदा था उन सब को प्यार की तरंगे भेजा करो । मन से उन्हे कहा करो हमारे समान से आप के जीवन में भरपूर संतुष्टि मिलेगी । भगवान आप की सब अच्छी मनोकामनाएं पूरी करेगा ।

-जब आप दुकान पर बैठते है तो मन में पूरे शहर को अपने सामने देखो और उन्हे मन से प्रेरित करो की आप जब भी इधर आए आप हमारे से समान खरीदना ।

-आप के मन की एंटी टाइम तरंगे सारे शहर के लोगो को मिलेगी । जब कभी उन्हे आप के दुकान वाली चीजो की जरूरत होगी वह बजार आएंगे । उन्हे आप की चीजे पसंद आएगी और वह खरीदेंगे ।

-जो ग्राहक एक बार आप की दुकान पर आता है, उनकी शकले और पसंद याद रखो ।

-जब आप अपनी दुकान के लिए माला खरीदो तो उस समय अपने ग्राहको को मन में देखा करो की उन्हे यह यह पसंद आएगा की नहीं । अगर आप को लगे यह माल फलाने फलाने को अच्छा लगेगा तब आप वही समान खरीद कर लो ।

-जब आप वह माल दुकान में रैक्स में लगा देगे तो मन में सोचना है यह पीस फलाने ग्राहक के लिए है ।

-जब आप खाली हो तो उस समान को देखते हुए अपने ग्राहको का मन में आवाहन करो कि आप की पसंद का पीस आप के लिए रखा हुआ है । आप जल्दी से आ कर इसे लें जाए ।

-आप की तरंगे आप के ग्राहको को पहुंचेगी और वह जब भी बाजार में आएंगे उन्हें आप की दुकान की तरफ खींच होगी और वह वही पीस खरीदेंगे जो आप ने उनके लिए सोच रखा था ।

-आस पास के गावों और शहरो की लिस्ट बना लो ।

-जब आप सुबह भगवान को याद करते है उस समय मन में नजदीकी गावों और शहर के लोगो को देखे और उन्हें बताए कि आप सब की अमुक अमुक पन पसंद चीजे हमारे पास है । आप उन्हें खरीद कर लें जाओ जी । वह लोग जब भी शहर आएंगे आप की दुकान का रुख करेगे ।

-ऐसे ही पूरे देश और विदेश के लोगो को आमंत्रित करते रहा करो जी ।

-जैसे जैसे काम बढ़ेगा आप उसे ऑन लाईन बेचना शुरू कर देना ।

-यह मन वाला काम आप को स्वयं ही करना है । ये काम किसी दूसरे व्यक्ति या नौकरों को नहीं सौपना । यह सिर्फ और सिर्फ आप को ही करना है ।

-आप बीमार हो, कहीं गये हुए है, दुकान से दूर हो, आप जहां भी है, इसी तरह जब तक जिंदा है मन से कार्य करते रहना है ।

-जो भी समान बेचना है उसमें चीटिंग नहीं करनी । अगर जरा भी खोट होगा तो आप के काम में बरकत नहीं होगी । थोड़े समय के लिए आप लाभ ले सकते हैं परन्तु सदा के लिए नहीं ।

-एक शब्द जीवन के सब दुखों से दूर कर देता है, वह है प्रेम ।

-दिन भर हर छोटी बड़ी अच्छी घटनाओं पर बात करो तो आप के जीवन में अच्छी चीजे आयेगी ॥

-प्रेम की शक्ति के लिये सब कुछ सम्भव है ।

-चाहे कैसी भी परिस्थिति हो प्रेम आप को मुक्त कर सकता है ।

-जब आप प्रेम करते हैं तो समझो की आप सृष्टि के सब से प्रबल एवं महानतम शक्ति का इस्तेमाल कर रहे हैं ।

## आंतरिक बल 656

-मन एक रेडियो स्टेशन है

-मन की एंटी ट्रेवल तरंगे और व्यापार में सफलता

-दुनियां की प्रत्येक वस्तु जीव वा निर्जीव से प्रकमपन्न उत्पन्न हो रहे हैं । जब हम व्यापार में लोगो के प्रति कल्याण की भावना रखते हैं और ऐसे चीजे बनाते हैं जिन से सभी को फायदा हो तब आप का व्यापार सभी को अपनी तरफ आकर्षित करेगा ।

-व्यापार के पीछे हमारे विचार अगरबत्ती की तरह ग्राहको को आकर्षित करेगे ।

- जो भी लोग दुकान पर आएंगे उन्हें ऐसे लगेगा जैसे अपने घर में आये है और उन्हें आप का माल पसंद आएगा ।

-ग्राहको के प्रति कल्याण के संकल्पों से ऐसी खुशबु निकलती है जिसका हर कोई दीवाना बन जाता है । लोग ऐसे व्यापारियो को ढूंढते फिरते है ।

-दूसरो को लाभ पहुंचाने वाले संकल्पों से ऐसी तरंगे बनती है जो सभी को अच्छी लगती है । प्रत्येक व्यक्ति अपना लाभ सोचता है और जब उसे मन पसंद सस्ता और टिकायू समान मिलता है तो उन के मन को चैन मिलता है । उनका मन तृप्त हो जाता है ।

-योगी जहां तपस्या करते है वहां हिंसक जीव जन्तु भी मिलजुल कर रहने लगते है । ऐसे ही जिन व्यापारियो के मन में दूसरो के प्रति कल्याण की भावना होती है उन के विरोधी भी उन से मिल कर चलने लगते है ।

-जब हम दूसरो को लाभ पहुंचाने के लिए व्यापार करते है तो सभी ग्राहक उमंग उत्साह से भर जाते है ।

- जिस व्यापारी के नौकर खुशी से भाग भाग कर काम करते है । नौकरों के चेहरे पर खुशबू है तो समझो आप के व्यापार में बरकत पड़ेगी ।



- योगियों की तरह सभी व्यापारी भी विश्व कल्याण के आधार मूर्त हैं । व्यापारी सूक्ष्म में अपने उत्पादों के प्रति विश्व कल्याण का भाव रखें तो वह भी योगियों जैसी अनुभूति करेंगे ।

-दूसरों को लाभ पहुंचाने के विचारों से उन्हें उत्साह मिलती है जब भी कोई ग्राहक आये तो मन में सोचा करो इसे कौन सी आइटम दूं जो इसे बहुत लाभ हो तब वह माल खरीदने के लिए लालायित होगा क्योंकि वह लाभ ही तो चाहता है ।

-दूसरों के प्रति लाभ के विचार रखने से सांप भी नहीं काटते और शेर जैसी जानवर भी मित्र बन जाता है ।

-समान बेचने से अच्छा अच्छा महसूस हो तो समझ लो कि आप के मन में कल्याण की भावना है अगर बुरा बुरा महसूस हो तो समझो आप लोगों का नुकसान कर रहे हैं और आप का व्यापार फलेगा नहीं ।

-लोगों को लाभ कैसे हो जब यह सोचते हैं तो उस समय विचारों से खुशबु निकलती है, मन की यह एंटी टाइम तरंगें हैं जो लोगों को आकर्षित करती हैं ।

-जब दूसरों के हित की सोचते हैं, उसे धनवान बनाने की सोचते हैं, उसे नीरोगी बनाने का सोचते हैं, ऐसे सब विचारों से आकर्षण पैदा होता है ।

-जब योग न लग रहा हो, मन में खुशी नहीं है, पढ़ने को मन नहीं कर रहा हो, काम करने का मन न हो तो समझो मन से लोगो का नुकसान कर देर है ।

-सदा मन में सात्विक विचार रखो चाहे परिस्थिति कैसी भी हो । एक शब्द बाबा ( भगवान ) आप प्यार के सागर है इसे रिपीट करते रहो इस से ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जिस से शारीरिक वा मानसिक विघ्न नष्ट हो जाते है और व्यापार बहुत अच्छा चलने लगता है ।